अखण्ड ज्योति

सुधा बीज बोने से पहले कालकूट पीना होगा ।
पहन मौन का मुकट, विश्व-हित मानव को जीना होगा ॥

वर्ष २] मथुरा, २० नवम्बर सन् १९४१ [अंक ११
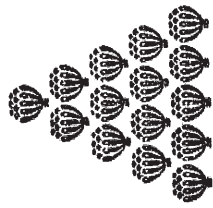
अपने पथिक से ।

लेखक—श्री राम रीझनजी रसूलपुरी ।
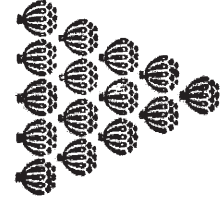
कितनी दूर, कहाँ से आये; ओ अज्ञात देश के वासी ।
निशिदिन अपनी राह जा रहे, कितनी दूर तुम्हारी काशी ?

संबल साथी हीन विजन में एकाकी निर्जन कानन में,
क्यों असीम की ओर लक्ष है ? अविश्रान्त जीवन-प्रांगण में ॥

क्षणभर रुको, पथिक, निज पथपर, श्रान्ति मिटालो, सुस्थिर होलो ।
अगम कूल है जिस असीम का, कैसे पार करोगे बोलो ?

अरे, ठहर जा ! देख लगे है वहां विपुल बाजार ।
क्रय विक्रय है मोल तोल है, निज निज का व्यापार ॥

लेलो कुछ तो पथिक यहाँ से अपनी गाँठ टटोल ।
हीरक और हिरण्य यहां बिकते गुञ्जों से तोल ।

खिले फूल जो आज हँस रहे, ले यौवन का भार ।
उन के उर में छिपी वेदना की प्रतिमा साकार ॥

सुना रही है उत्पीड़न की व्यथा करुण संदेश ।
क्षण भर सुन लेना, रुक कर फिर जाना अपने देश ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अखण्ड ज्योति

। बीज बोने से पहले, काल कूट पीना होगा।
न मौत का मुकुट, विश्व-हित मानव को जीना होगा।।

मथुरा, २० नवम्बर सन् १९४१

प्रार्थना का स्वरूप

पवित्र आत्मा वाले मनुष्य की प्रार्थना व स्त-
: होती है। वह सन्निपात के रोगी की तरह
चीज की इच्छा नहीं करता वस्तुतः किसी
ु की किसी को जरूरत हो तो उस शुद्ध
च्छा की पूर्ति अवश्यमेव वहीं से न कहीं से
ाती है। कोई आदमी पानी में डूब रहा है तो
ने वाले उसके प्रार्थना करने से पूर्व उसे बचाने
लिये दौड़ पड़ते हैं। किसी के घर में आग लग
हो तो बिना बुलाये सैकड़ों मनुष्य उसे बुझाने
जाते हैं। विद्या पढ़ने के इच्छुक बालक के
ो कोई न कोई दयालु महानुभाव उसके लिये
श्यक सामिग्री जुटा ही देते हैं। सच्चे जिज्ञासु
सच्चा गुरु मिलकर रहता है। परोपकार में
धार्मिक संस्थाओं का बहुत बड़ा मासिक खर्च
ने आप जुट जाता है। किन्तु आलस्य और
दवश कामचोर आदमी जो मांगते हैं वह
तविक आवश्यकता नहीं होती ऐसे लोग एक
पाई मांगते फिरते हैं, और हर जगह से
कारे जाकर आधा चौथाई पेट भरकर सोजाते
सच्ची आवश्यकताओं की पूर्ति के पर्याप्त
धन ईश्वर की इस पवित्र सृष्टि मेंमौजूद है।
वे निकम्मे लोगोंको प्राप्त नहीं होते।

अदृश्य जगत् में अनेक प्रकार और स्वभावों की चेतनाऐं निवास करती हैं। इन में अनेक देव स्वभाव की और सूक्ष्म शक्तियों से सम्पन्न होती हैं। जिस प्रकार हम डूबते हुए मनुष्य को बचाने के लिये अनायास ही दौड़ पड़ते हैं वैसे ही अपने उच्च संस्कारों के कारण वे चेतनाऐं मृत्युलोक के प्राणियों की सहायता करती हैं जिन्हें कि उस सहायता की वास्तविक आवश्यकता होती है। हम उनके कार्य कलापों को देख नहीं पाते तो भी वे हमारी मूक प्रार्थना को सुनती है और उसके औचित्य को देखते हुए भरपूर सहायता देने का प्रयत्न करती रहती हैं गोस्वामी तुलसीदासजी को राम का दर्शन कराने के लिये हनुमान जी की सहायता प्राप्त होने की कथा प्रसिद्ध है। ठीक ऐसी ही सहायताऐं हम में से बहुतों को जीवन में अनेक बार मिलती हैं। परन्तु जड़ जगत् में लिप्त रहने और आध्यात्मिक साधनाओं में दूर हटते जाने के कारण हमारी मनो भूमि ऐसी जड़ बन गई हैं कि अपने उन अदृश्य सहायकों के स्वरूप को पहचानना तो दूर उन सहायताओं तक को नहीं जानते। काश; आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा हमने अपनी अन्तर्दृष्टि को कुछ स्वच्छ किया होता तो देखते कि हमारे ऊपर कितनी अयाचित सहायताओं की वर्षा हो रही है और हम दूसरों के जरासे उपकार के लिये कितनी आना कानी करते हैं।

वास्तविक आवश्यकता एक उत्तम प्रार्थना है। वह अखिल आकाश में ऐसी कम्प-लहरें उत्पन्न करती हैं जिनमें पर्याप्त मात्रा में चुम्बकत्व होता है। कबूतर बाज अपने सिखाये हुए कबूतर को ऊपर उड़ा देते हैं और वह किसी झुण्ड में जाकर बहुत से कबूतरों को उड़ाकर अपने साथ ले आता है उसी तरह आकर्षण शक्ति युक्त हमारी कामना लहरें जब यात्रा पूरी करके अपने मूल स्थान पर वापिस लौटकर आती हैं तो अपनी जाति के बहुत से तत्वों को साथ में चिपकाये लाती हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चुम्बक पत्थर के टुकड़े को लोहे के बुरादे के बीच में से यदि खींचकर ले जाओ तो उसके साथ साथ बहुत सा चूरा चिपका हुआ चला आवेगा। बलवान मानस की प्रार्थना जब वापिस लौटती है तो उसके साथ उसकी पूर्ति के बहुत से साधन भी होते हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में अभी यह निराकरण अच्छी तरह नहीं हुआ है कि किन वस्तुओं के लिये किससे प्रार्थना करनी चाहिए और उसकी क्या विधि होनी चाहिये ? जिज्ञासुओं को जानना चाहिये कि परमात्मा से पिता का काम लेना चाहिये नौकर का नहीं। जिस प्रकार हम किसी महान् कार्य का करने के लिये चलते हैं तो माता पिता या गुरुजनों के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद चाहते हैं। गुरु जब आशीर्वाद देते हैं और कई बार वह आशीर्वाद सुदृढ़ कवच का काम देता है। दिव्य आत्माओं द्वारा वरदान प्राप्त होने की साक्षी से समस्त धर्मों के इतिहास पुराण भरे पड़े हैं। गुरुजनों के आशीर्वाद से कठोर कार्य सहज में ही पूरे हो जाते हैं। क्योंकि अन्तरात्मा से निकला हुआ आशीर्वाद सूक्ष्म जगत् में एक स्वतन्त्र व्यक्ति का रूप धारण कर लेता है और उनकी रक्षा करता है। दुर्वासा के शाप से एक राक्षसी का पैदा होकर अम्बरीष के पीछे दौड़ना और शिवजी के शाप से वीरभद्र का पैदा होकर राजा दक्ष का यज्ञ विध्वंश करने की कथाऐं झूठी नहीं हैं। उस समय के मनुष्यों के आत्मिक बल के अनुसार यह सूक्ष्म प्राणी अधिक बलवान होते होंगे और आंखों से प्रत्यक्ष भी दिखाई देते होंगे पर आज भी उनका अभाव नहीं है। आत्म शक्ति के अनुसार इन अदृश्य प्राणियों का उत्पन्न होना विज्ञान सम्मत है। वे सदा पैदा होते थे और अब भी होते हैं। अस्तु गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त करना किसी महान् कार्य के लिये आवश्यक होता है। परन्तु कोई मूर्ख यदि यह सोचे कि 'पिताजीके आशीर्वाद में इतना बल है तो शरीर में न जाने कितना होगा इसलिये इन्हें घोड़ा बनाकर सवारी के काम में लिया जाय' तो उस अज्ञानी का विचार उपहासास्पद होगा। यदि वह अपने इस विचार को कार्य रूप में परिणित करे तो लाभ के स्थान पर हानि ही उठावेगा। हम में से असंख्य लोग इसी नादानी को दुहराते रहते हैं।

विश्व कवि श्री. रवीन्द्रनाथ टैगोर एक स्थान पर कहते हैं-'परमात्मा हमें बुद्धि देता है, जिसका अर्थ है कि हम अपने ऊपर निर्भर रहें। उसने हमें यह आदेश दिया है कि हम रोते हुए जाकर उसका द्वार न खटखटावें। उसने अपने को हमारे क्षेत्र से अलग रक्खा है और एक चिन्ता शील माता की तरह बार-बार प्रकट नहीं होता। उसने पूरी पूरी जिम्मेदारी के अधिकार देकर हमारे पौरुष को सम्मानित किया है। वह कायरों का उँगली नहीं पकड़ता, वरन् उन्हें विपत्तियों को अकेले भुगतने के लिये धकेल देता है ताकि वे निर्भयता और स्वावलम्बन के साथ जीना सीखें'' यह शब्द बड़े ही महत्व पूर्ण हैं। पिता को यह पसंद नहीं कि हर पुत्र उसे घोड़ा बनावे या हर घड़ी नौकर की तरह पानी पिलाने और हाथ धुलाने के लिये मजबूर करे। परन्तु अज्ञानी भक्त स्वयं निकम्मे बैठे रहते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर आप हमारे कपड़े धोकर सुखा जाइये। जब सारे अधिकार और सारे हथियार हमें दे चुका है फिर भी हम उसे ही हल में जोतना चाहें तो यह कितनी बे अक्ली की बात है। हर काम जिसे हम उचित समझते हैं और करने की योग्यता रखते हैं स्वयं करें। परमात्मा द्वारा दिये हुए शरीर और मस्तिष्क का भरपूर प्रयोग करें तो वह वस्तु जिस के लिये प्रार्थना करते हैं आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। चिट्ठियाँ लाने और ले जाने का काम डाकखाने का है, कोई मूर्ख यदि कलक्टर साहब के ऊपर बरस पड़े कि 'भगवन्! आप मेरी चिट्ठियां लाया कीजिये तो वे यही उत्तर देंगे कि-महाशय! सरकार ने इस सुविधा के लिये डाकखाने का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

महकमा अलग खोल दिया है, आप उससे भरपूर लाभ उठा सकते हैं, जो काम शरीर और मस्तिष्क के करने के हैं, उनको पूरे उत्साह और पूर्ण शक्ति के साथ करना चाहिये।

ईश्वर से प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए कि-"आप हमें प्रेरणा दीजिए, हमारे अन्दर अपनी शक्ति का संचार कीजिए, हमें साहस, उत्साह और धैर्य दीजिए।" यही वस्तुऐं सूक्ष्म सत्ता के केन्द्र से आती हैं और इन्हें ही हम ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर आटा गूँधने न आवेगा, पर हम प्रार्थना करेंगे तो वह हमारी उस योग्यता को जागृत कर देगा, जिसके द्वारा वैसे कामों का आसानी से किया जा सकता है। इन पंक्तियोंमें बार बार यह दुहराया जा रहा है कि आप अपना कर्तव्य अवश्य पूरा कीजिये परिश्रममें रत्तीभर भी कमी न रखिये। तभी पिता का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं, प्रार्थना का पहली सीढ़ी यह है कि यदि किसी सांसारिक वस्तु की हमें आवश्यकता है तो उसके लिये भरपूर प्रयत्न करें, जैसे आज्ञाकारी पुत्र को पिता अधिक प्यार करता है और अधिक वस्तु देता है, उसी प्रकार शक्ति भर प्रयत्न करने की ईश्वरीय आज्ञा को पालन करने वाला जगद् पिता का अधिक स्नेह भाजन बन सकता है। भूल कर भी अकर्मण्य होकर मत बैठिये कि हम तो भजन करेंगे, यह कार्य तो ईश्वर करके रख जायगा। ईश्वर को ऐसे भजन या खुशामद की जरूरत नहीं है कि वह बदले में तुम्हारा चूल्हा फूँके। प्रार्थना की दूसरी सीढ़ी यह है कि कर्तव्य पूरा करते हुए भी प्रारब्ध कर्मों के कारण, अपनी त्रुटि के कारण या समिष्टि मन के दोषों के कारण जो विपत्तियाँ सामने आवें उनसे कायरों की भाँति न तो डरें और न घबरावें वरन् प्रभु से प्रार्थना करें "कि प्रभो, हमें इनके सहन करने की शक्ति दीजिये, हमारे अन्दर धैर्य भर दीजिये, ताकि कोड़े को चिरवाते समय विचलित न हों।" विपत्तियाँ सब पर आती हैं, राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद शिव, दधीचि, हरिश्चन्द्र जैसी महान आत्माओं को विपत्ति ने नहीं छोड़ा, तो हम उससे अछूते नहीं बचे रह सकते। अप्रिय अवस्था को देख कर न तो खीजना चाहिए और न डरपोकों की तरह किं कर्तव्य विमूढ़ होना चाहिये। हमें उचित है कि ऐसे समय में निवारण का उपाय करें और जब तक वह कष्ट है तब तक अविचल धैर्य की प्रभु से याचना करें। तीसरा प्रेम का ऊँचा दर्जा है 'सब से ऊँची प्रेम सगाई'। परमात्मा-सतचित् आनन्द स्वरूप है। जैसे जैसे आत्मा परमात्मा के निकट पहुंचती जाती है, वैसे ही वैसे आनन्द का अविचल स्रोत प्राप्त होता जाता है। स्वार्थ और इन्द्रिय परायणता को छोड़ कर जैसे जैसे हम सत्य और परमार्थ की ओर बढ़ते जाते हैं, वैसे ही वैसे आत्मा निर्मल होकर दिव्य स्वरूप में चमकने लगती है और अन्ततः हृदय में आनन्द ही आनन्द शेष रह जाता है। जिस दिन एक पैसा भिखारी को देकर हम स्वार्थ का करोड़वाँ कण छोड़ देते हैं, उस दिन मन बड़ा हलका रहता है, अन्दर शान्ति सी प्रतीत होती है। स्वार्थ और लिप्सा का जितना ही अधिक त्याग होता चलता है उतने ही अनुपात से लघु आत्मा परम् आत्मा के रूप में परिणित होती जाती है तत्व दर्शियों का मत है कि जिसका हृदय तुच्छ विचारों से रहित होकर समदर्शी हो गया है अपने और पराये में जिसे भेद नहीं प्रतीत होता वह अभी भूत परमहंस यथार्थ में जीवन मुक्त है। मुक्ति का आनन्द जिसके लिये प्राणी व्याकुल रहते हैं, वह पवित्र और निस्वार्थ आत्मा को ही प्राप्त हो सकता है। भले ही वह आत्मा शरीर धारण किये हुए हो या अदृश्य जगतमें विचरण कर रहीहो

प्रार्थना का एक ही रूप होना चाहिए 'विशुद्ध ज्ञान' की याचना। यह पदार्थ सूक्ष्म लोक से ही प्राप्त होता है। इसलिए नित्य जितने अधिक समय तक संभव हो मन की वाह्यमुखी वृत्तियों को रोक कर अन्तर्मुखी करना चाहिये। साँसारिक विचारों को बिलकुल परित्याग करके आत्म चिन्तन करना चाहिये।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गीता में भाग्य

न जाने क्यों और किस प्रकार यह घातक विश्वास जन साधारण के मस्तिष्कों में घर कर गया है कि मनुष्य का भविष्य भाग्य के आधीन है। 'ईश्वर ने जैसा कुछ भाग्य में लिख दिया है, वही भोगना पड़ेगा हमारे करने से कुछ नहीं हो सकता।' यह विचार मूर्ख और आलसी ही रख सकते हैं। अपनी त्रुटियों की जिम्मेदारी ईश्वर पर थोपकर लोग कुछ देर के लिए आत्म वंचना करलें इसके अतिरिक्त और कोई लाभ किसी को नहीं मिल सकता।

ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि देकर कर्म क्षेत्र मे भेजा है कि वह इच्छानुसार काम करे और तदनुसार फल भोगे। ईश्वर किसी को बुरे कर्म करने की प्रेरणा नहीं करता। वह तो इन कर्म अकर्मों से बहुत दूर रहता है। गीता में भगवान कहते हैं—

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्म फल संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥
॥ गीता अ० ५ श्लोक १४ ॥

कर्तापन, कर्म और कर्म फल को ईश्वर नहीं बनाता इनमें तो जीव स्वभाव से ही प्रवृत्त होता है।

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥
॥ अ० १३ श्लोक ३१ ॥

हे अर्जुन ! ईश्वर अनादि है, निर्गुण है, और अपरिवर्तनशील है। वह शरीरमें है तो भी कुछ नहीं करता और अच्छी या बुरी बात से उसका कोई सम्बन्ध नहीं।

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्म फले स्पृहा।
इति मां योऽभि जानाति कर्मभिर्न स बद्धयते
॥ अ० ४ श्लोक १४ ॥

मुझे (ईश्वर को) कर्म फल की इच्छा नहीं है इससे कर्म मुझको बन्धन में नहीं डालते और जो मनुष्य मुझको ऐसा समझता है कि ईश्वर न कुछ करता है और न कराताहै निरंजन, निष्काम, अकर्ता, अभोक्ता, अव्यय, निर्गुण, कूटस्थ, अचिन्त्य और अविकारी है, वह मनुष्य भी कर्म के बन्धन में नहीं पड़ता।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत।
मोहितं नाभि जानाति मामेभ्य परमव्ययम्।
॥ अ० ७ श्लोक १३ ॥

सत्व गुण रजोगुण और तमोगुण इन तीन गुण वाले स्वभाव पर सारा जगत् मोहित है। इससे वह नहीं जानता कि मैं (ईश्वर) इन तीनों गुणों से अलग हूं, श्रेष्ठ हूं और विकार रहित हूँ।

मूढोऽयं नाभि जानाति लोकोमामजमव्ययम्।
॥ अ० ७ श्लोक २५ ॥

यह मूढ़ लोग नहीं जानते कि मैं अजन्मा और विकार रहित हूँ।

नादत्ते कस्य चित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञाने नावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।
॥ अ० ५ श्लोक १५ ॥

सर्व व्यापक ईश्वर किसी के पाप पुण्यों से सम्बन्ध नहीं रखता। अज्ञान से ज्ञान ढका होने के कारण ही जीव मोह में पड़ जाते हैं।

गीताकार ने स्पष्ट कर दिया है कि जो जैसा करता है वैसा पाता है इसमें ईश्वर भाग्य या और किसी का दोष नहीं है।

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्म निरतः सिद्धिं यथ विन्दन्ति तच्छृणु ॥
॥ अ० १८ श्लोक ४५ ॥

अपने अपने कर्म में लगे हुए मनुष्य अच्छी से अच्छी और बड़ी से बड़ी सिद्धि पाते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मै ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।
॥ अ० ६ श्लोक ५ ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आत्मा ही आत्मा का मित्र है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है इसलिए आत्मा का उद्धार करना चाहिए, नाश नहीं।

बन्धुरात्मात्मन स्तस्य येनात्मैवात्मनोजितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥
॥ अ० ६ श्लोक ६॥

जिसने आत्मा को अपनी आत्मा से जीता है उसकी आत्मा अपनी आत्मा का मित्र है और जो अनात्मा है अर्थात् आत्म ज्ञान से रहित है उसी की आत्मा उसके साथ शत्रु सा व्यवहार करती है।

गीता के अन्त में सारा ज्ञान सुनाने के बाद भी भगवान ने किसी प्रकार का हुक्म नहीं दिया वरन् उसकी स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए यही कहा है—जो मेरी इच्छा हो सो कर।

इति ते ज्ञान माख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं मया।
विमृश्यै तदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।
॥ अ० १८ श्लोक १३॥

मैंने तुझसे गुप्त से गुप्त ज्ञान कहा, इसको शुरू से अन्त तक विचार करके जैसी तेरी इच्छा हो वैसा कर।

पाठकों को यह जानना चाहिये कि ईश्वर किसी के भाग्य में कुछ किसी के में कुछ लिख कर पक्षपात् नहीं करता और न भविष्य को पहले से ही तैयार करके किसी को कर्म करने की स्वतन्त्रता में बाधा डालता है। हर आदमी अपनी इच्छानुसार कर्म करने में पूर्ण स्वतन्त्र है। कर्मों के अनुसार ही हम सब फल प्राप्त करते हैं। इसलिये भाग्य के ऊपर अवलंबित न रह कर मनुष्य को कर्म करना चाहिए।

यह न भूलना चाहिये, कि जो दैवी अंश तुम में है सो दूसरे में भी है।

× + × ×

लाख मन ज्ञान से बढ़ कर एक मुट्ठी सदाचार उत्तम है

× × × ×

आत्म बल।

(योगी अरविन्द घोष)

महापुरुष की तपस्या, स्वार्थ त्यागी का कष्ट सहन, साहसी का आत्म विसर्जन योगी का योगबल ज्ञानी का ज्ञान संचार और सन्तों की शुद्धि साधुता आध्यात्मिक बल का निर्भर है। मूल प्रकृति शुद्धात्मा के आधीन है वही आद्य-प्रकृति असम्भव को भी सम्भव कर दिखाती है। मूँक को वाचालता तथा पङ्गु को पर्वत चढ़ने को शक्ति देती है। समस्त जगत् इसी शक्ति से निर्मित हुआ है।

हमारे पास बाहुबल नहीं है। समग्र सामग्री नहीं है शिक्षा नहीं है, न राज शक्ति ही है। तब किसके बूते पर हम उस कार्य साधन को उद्यत हुए हैं जो प्रबल और शिक्षित यूरोपीय जाति, के लिए भी असाध्य जान पड़ता है। लेकिन यह तो सब को स्वीकार करना पड़ेगा। कि केवल बाहुबल से किसी महान कार्य का होना असम्भव है। अतः बाहु बल से आत्म बल ही कार्य सिद्धि में अधिक क्षमता रखता है।

आत्म बल ही बाहुबल को तुच्छ प्रमाणित कर, मनुष्य जाति को सिखाता चला आ रहा है कि यह जगत् भगवान का राज्य है। अन्य स्थूल प्रकृति का खाली क्षेत्र नहीं। जिसका आत्मबल विकसित हो चुका है उसके जय की सामिग्री आप ही आप सामने उपस्थित हो जाती है। सारी विघ्न बाधाएं और विपत्तियां स्वयं टूट कर अनुकूल अवस्था को लाती है। कार्य का सामर्थ्य स्वयं प्रकट होकर तेजस्वी और वेग गतिवान होता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अवकाश के क्षण

(श्री. स्वेट मार्डेन)

हम अपन निर्धारित काम करते हैं। किन्तु काम को करते हुए भी बहुत सी फुरसत की घड़ियाँ मिलती हैं यदि उनका उपयोग ठीक प्रकार किया जावे तो इस थोड़े-थोड़े समय से ही बहुत काम हो सकता है।

पार्लमेण्ट के प्रमुख वक्ता एल. हुवरिट का ओजस्वी भाषण सुनकर उसके भाई प्रभावित हुए और प्रशंसा करते हुए बोले—"हमारे कुटुम्ब में सब से प्रतिभावान् हुवरिट है। मुझे याद है कि जब हम लोग खेला करते थे तब उस फुरसत के वक्त में वह अपना काम किया करता था।' हेरेट बीचरस्होव ने अपनी सर्वोत्तम कृति 'टाम काका की कुटिया' की रचना घर गृहस्थी के झंझटों के बीच फँसे रहते हुए ही की है। भोजन की प्रतीक्षा में जितना समय लगता था उतने ही क्षणों का नियम पूर्वक काम में लाकर बीचर महोदन ने एक महा ग्रन्थ को पढ़ डाला। महाशय लांगफेलो ने चाय उबलने तक की फुरसत को काम में लाकर 'इन करनो' नामक ग्रन्थ का अनुवाद कर डाला था। कवि वर्न्स खेती का काम करते थे जब जहाँ मौका मिलता तो कविता करने लगते उनकी अमर रचनाओं का बड़ा मान है। महा कवि मिल्टन राज्य मंत्री था उसे बड़ा काम रहता था फिर भी उसने कुछ घड़ियां नित्य बचाकर 'पेरेडाइजलास्ट' नामक महाकाव्य रच डाला। ईस्ट इण्डिया हाउस में क्लर्की करते-करते जान स्टुअर्ट मिल ने अपना सर्वोत्तम ग्रन्थ लिखा।

डाक्टर गेलीलियो को अपने बीमारों की देख भाल में बड़ा सर पचाना पड़ता था फिर भी वह कुछ समय बचाकर विज्ञान की शोध करता। अन्त में उसने ऐसे-ऐसे आविष्कार किये जिनके लिये संसार सदा उसका कृतज्ञ रहेगा। माइकिल फ्रेडे नामक जिल्द साज ने कुछ घंटे बचाकर बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक शोधें कर डालीं। चार्ल्स फ्रास्ट नामक चमार एक घंटे प्रति दिन अध्ययन कर के अमेरिका का सर्वोपर गणिताचार्य होगया। रोज थोड़ा-थोड़ा काम करने से कुछ ही दिनों में उसका आश्चर्यजनक परिणाम दिखाई देता है। प्रति दिन एक घंटा भी किसी काम के सीखने में लगाया जाय तो मनुष्य उसमें बहुत उन्नति प्राप्त कर सकता है।

मि० माजर्ट प्रतिक्षण कुछ न कुछ करते रहते थे उन्होंने अपनी मृत्यु शैय्या पर 'रेक्यूयम' नामक पुस्तक को लिखा। डाक्टर मारसन गुड लंदन में एक बीमार को देखने गये रास्ते में उन्होंने 'लुक्रेशियश' का अनुवाद कर डाला। हेनरी क्रिक ह्वाइट ने दफ्तर आने जाने के समय में ग्रीक भाषा सीखी थी और डाक्टर वर्न ने इटालियन और फ्रेंच भाषाओं को घोड़े की पीठ पर पढ़ा था। समय जैसी अमूल्य वस्तु दुनियाँ में और कोई नहीं हो सकती। जार्ज स्टीफनसन कहते हैं—फुरसत के वक्त को मैं सुवर्ण समझता हूँ और उसे कभी व्यर्थ नहीं जाने देता। सिसरो कहता था—'जिस समय को अन्य व्यक्ति दिखावे तथा आराम में खर्च करते हैं उसे ही मैं तत्वज्ञान के अध्ययन में लगाता हूँ।' इटली के एक विद्वान ने अपने दरवाजे पर लिख रखा था—'जो यहाँ आवे वह मेरे काम में मदद करे।' जान एड्यस का समय जब कोई नष्ट करता था तो उसे बड़ा बुरा लगता था। ह्वीटियर कहता है—'आज के दिन में हमारा भविष्य छिपा हुआ है। आज का दिन नष्ट करने का अर्थहै अपने भाग्यको कुचलना।'

समय ही सम्पत्ति है। सच बात तो यह है कि पैसे की अपेक्षा समय कहीं अधिक मूल्यवान् है। समय को बरबाद करने के मानी हैं—शक्ति को नष्ट करना, योग्यता को नष्ट करना, सौभाग्य को नष्ट करना, और अपना लोक परलोक नष्ट करना। समझदार व्यक्ति फुरसत के समय के छोटे-छोटे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अन्तस्थल की टेर।

(श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर)

मनुष्य की सब से श्रेष्ठ प्रार्थना यह है कि वह असत्य से सत्य की ओर बढ़े, अँधेरे से उजाले की दिशा में अग्रसर हो, मृत्यु से अमृतत्व की तरफ पग बढ़ावे। यह दुर्बलों के उपयुक्त प्रार्थना नहीं है। वह तो मनुष्य के परम कल्याण का आह्वान है। वह उसे कष्ट और वेदनाओं में से पूर्णता की ओर पुकार रहा है। वह मनुष्य की अन्तरात्मा में से रुद्र की स्फूर्ति व्यक्त करता है और उसे सत्य के विकट मार्ग पर आरूढ़ करता है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय
असतो मा सद्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय

— — — —

टुकड़ों को बचाकर महान् बन जाते हैं किन्तु उन्हें थोड़ी लापरवाही में उड़ा देने वाले अपनी असफलता पर रोते हैं और भाग्य को कोसते हैं। समय मित्र के वेश में हमारे संमुख उपस्थित होता है और ईश्वर की भेजी हुई बहुमूल्य नियामतें हमारे लिए लाता है किन्तु जब हम उसका उचित आदर नहीं करते तो उलटे पावों लौट जाता है। फ्रेंकलिन कहते हैं— "क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? यदि है तो समय को व्यर्थ नष्ट न करो क्योंकि जीवन समय से ही बना हुआ है।" शेक्सपीयर के यह शब्द कितने मार्मिक हैं—"मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।"

दंगे और अहिंसा

(महात्मा गांधी)

मेरी अहिंसा में खतरे से भाग जाने की या अपने प्रियजनों को अरक्षित छोड़ देने की गुञ्जा-यश नहीं है। जहाँ हिंसा और डर कर भाग जाने में से एक चीज़ चुननी हो वहाँ मैं कायरपन की अपेक्षा हिंसा को ही अधिक पसन्द कर सकता हूँ। जिस प्रकार मैं किसी अन्धे आदमी को स्वास्थ्यकर दृश्यों का आस्वाद लेने के लिए ललचा नहीं सकता उसी प्रकार डरपोक को अहिंसा का उपदेश नहीं दे सकता। अहिंसा तो वीरता का गौरीशंकर है। मेरा अपना यह अनुभव ही है, कि जिन लोगों ने हिन्सा की तालीम पाई है उनको अहिंसा की श्रेष्ठता समझाने में मुझे कोई कठिनाई नहीं होती। मैं खुद बरसों तक खुद कायर रहा तब तो मेरे दिल मे हिंसा थी। ज्यों ज्यों मैं अपनी कायरता छोड़ने लगा, त्यों२ अहिंसा को कीमत करने लगा। जो हिन्दू संकट के समय अपने कर्तव्य क्षेत्र से भागे वे इसलिए नहीं भागे कि वे अहिंसक थे या प्रहार करने से परहेज करते थे, बल्कि इसलिए भागे कि मरना या कोई चोट सहना भी नहीं चाहते थे। शिकारी कुत्ते के सामने से भाग जाने वाला खरगोश कुछ खास तौर से अहिंसक नहीं होता। वह तो कुत्ते को देखते ही काँपने लगता है और अपनी जान बचाने के लिये भागता है। जो हिन्दू अपनी जान बचाने के लिए भाग गये वे अगर अपना सीना खोल कर मुसकराते हुए अपनी जगह पर डटे रहते और मरजाते तो वे दर असल अहिंसक होते अथवा यश उज्वल करते, अपने धर्म की कान्ति बढ़ाते और अपने मुसलमान हमलावरों की दोस्ती के पात्र होते। अगर वे अपनी जगह डटे रह कर प्रहार के बदले प्रहार करते तो भी वे इससे कुछ कम अच्छा काम करते, फिर भी अच्छा ही काम करते।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तम्बाकू पीना छोड़ दीजिये

(ले०—श्री डाकूर ज्ञानचन्द्रजी)

शरीर पर तम्बाकू का घातक प्रभाव पड़ता है। यह मेदे को सिकोड़ कर पाचन क्रिया को शिथिल कर देती है और समस्त नर्वस सिस्टम मुर्दा हो जाता है। होठ काले पड़ जाते हैं, जीभ की स्वाद-शक्ति कम हो जाती है। तम्बाकू पीने पर निम्न परिणाम होते हैं:—

(१) गीली भाप बनती है (२) कार्बन बनती है, कार्बन गले में तथा कलेजे की नालियों में जम जाती है। (३) अमोनिया होता है, जो अधिक काल तक पीने से जिह्वा को फाड़ डालता है, गले को खुश्क करता है, जिससे प्यास बढ़ती है और तीव्र धूम्रपान की इच्छा जाग्रत होती है। अमोनिया रक्त को भी दूषित करता है। (४) कारबोनिक एसिड 'कोयले का तेजाब' होता है, जिससे सिर दर्द, अनिद्रा और स्मरण शक्ति का ह्रास होता है। (५) निकोटीन प्रवाहित होती है, निकोटीन एक तीव्र विष है, इसकी एक बूंद खरगोश के मुंह में डाल दो तो वह तुरन्त मर जायगा। डाकूर ओडे ने बिल्ली की जीभ पर एक बूंद डाली तो वह तुरन्त मर गई। (६) और भी सूक्ष्म विष हैं; जैसे कोलिडीन, प्रुस्कि एसिड, कार्बनमोनक-साइड, फुरफुरल और एक्रोलीन, कोलिडीन, जहरीले क्षार है, जिससे स्नायु दुर्बल हो जाते हैं और चक्कर आने लगते हैं। प्रुसिकएसिड ज्ञान-तन्तुओं को मलीन कर देता है। सिर में भारीपन रखता है तथा मन में अरुचि पैदा करता है। कार्बनमोनक्साइड दम घोट कर मार डालने वाली गैस है। इसका प्रभाव यह होता है कि साँस जल्दी चलने लगती है, हृदय की गति तेज हो जाती है, रोमाँच और ऐंठन हो जाती है, आँखों की पुतलियां फैल जाती हैं और ठंडा पसीना, ठंडा बदन और बेहोशी होती है। फुरफुरल मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तुओं को ढीला कर देता है, एक्रोलीन एक गैस है, जो मन में चिड़चिड़ाहट पैदा कर देता है।

अब प्रश्न यह है कि तम्बाकू पीना त्यागा जा सकता है, अथवा नहीं? हमारा विश्वास है कि प्रत्येक ऐब का परित्याग सम्भव है। मन का संकल्प ही तप है जिस चीज को मन ने भुला दिया, वह छूट गई। जब तक मन दृढ़ है तब तक वह तप भी अखण्ड है। मैं प्रत्येक तम्बाकू पीने वाले से कहता हूँ कि वह इस ऐब को दृढ़ता से परित्याग करे, तम्बाकू पीना सर्वोपरि ऐब है। इसका नैतिक पाप परिवार को कष्ट पहुंचाता है। जरा उस अवस्था को सोचिये, जब एक अज्ञात नववधू एक सिगरेट पीने वाले के घर पहुंच कर अन्य अपरिचित आदतों के अतिरिक्त प्रणयकाल से भी भयभीत रहे, वह पति के मुंह से धुंए की बदबू को क्यों बरदाश्त करे, क्यों उसे धीरे-धीरे पी जाये। कोमल मिजाज स्त्रियाँ आरम्भ में दिमागी बू चढ़ जाने के कारण बेहोश हो गई हैं और इन्हें धीरे-धीरे अपना मिजाज उसे सह लेने के अनुकूल बनाना पड़ता है। वह जीवनपर्यन्त इस अभ्यास को निभाती हैं। पाठक इस बेवशी को तो समझिये, कैसा पैशाचिक आचार है!

स्त्री के बाद संतति उस दोष में रंगती है। अपने पिता को देख कर बेटा भी लुक छिप कर पीता है और बढ़ते-बढ़ते अपने पिता के रिकार्ड को तोड़ डालता है। आज स्कूल, कालेज के विद्यार्थियों को चुरट बिना चैन नहीं, इन करोड़ों युवकों के मुँह में कालिख पोतने वाले कौन हैं? उनके सिगरेटी पिता। मैं ऐसे सब पिताओं को जलती आग में कूद कर इस महा पाप का प्रायश्चित करने की सलाह देता हूँ। उन कोमल बच्चों की नई छाती को सिगरेट के धुंए से झुलसा कर उनके तेज और शुद्ध रक्त को विषैला बना कर उन्हें क्षय के गढ़े में डाल दिया जाता है, उनकी कमर झुकी, आँखों पर चश्मा चढ़ा कि गढ़े में पैर खिसका। इन्हें मृत्यु से कौन रोकेगा?

सिगरेट का तीसरा शाप परिवार का फूंकना है। घरों में आग लग जाना और मृत्यु हो जाना प्रकट सत्य है। दिल्ली के एक सुप्रसिद्ध करोड़-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ते परिवार में एक ऐसी ही करुण मृत्यु हुई थी, .से हम कभी नहीं भूल सकते। सर्दी के दिन , सेठ साहब रेशमी विस्तर पर पड़े सिगरेट पी ; थे। पीते-पीते झपकी लग गई और सिगरेट ाला हाथ छाती पर आ गिरा। सिगरेट जल ुा था, उसने कुरते को पार कर सीने को जला ाया। चमड़ी पर गर्मी पहुंची ही थी कि उनकी ंद खुल गई। उन्होंने उस स्थल को मसल ाला, महल में दौड़-धूप मच गई, डाक्टर साहब पहुंचते-पहुंचते उनका हार्ट फेल होने लगा था। जेक्शन देने पर भी चिराग बुझ गया। सेठ साहब ा हम अब तक अफसोस करते हैं।

मैं प्राकृतिक चिकित्सक हूँ और मुझे पूरा श्वास है कि बड़े से बड़ा पियक्कड़ भी प्रकृति ; आसरे इसे छोड़ सकता है। ध्यान रखिये कि ानका संकल्प सबसे पहला मुख्य उपाय है, "चाहे ो कुछ हो, पर मैं तो इसे पीऊंगा ही नहीं" संकल्प र डटे रह कर ८-१० दिन में स्वतः ही मन शांत ो जाता है और हुड़क मिट जाती है। फिर भी म कुछ उपाय देते हैं:—

१—सिगरेट एक दम छोड़ कर उसे देखने से ी अनिच्छा कर लेनी चाहिये। २—मन को सदैव ढ़ बनाये रखना चाहिये। ३—जब कभी मन न ाने, तबियत मचल ही रही हो, तो पारवारिक नों में बैठ कर एकान्तता नष्ट कर देना चाहिये। ाद रखो, अकेले रहोगे तो व्रत टूट जायगा, जी मचलाये, तबियत डूबी रहे, नींद नहीं आये, पेट ें कष्ट हो तो "अश्वगंधारिष्ट" सेवन करो। जब कभी आवश्यकता प्रतीत हो, एक मात्रा अश्व- ंधारिष्ट को पीलो। अश्वगंधारिष्ट सिगरेट, मद्य- ान आदि महा दोषों के छुड़ाने को दिव्य औषधि है। यह उनके शरीर को पूरा करती तथा ज्ञान- न्तुओं को धीरे-धीरे मलिनता से रहित करती है। 'अश्वगंधारिष्ट' जितना पुराना होगा, उतने ही पुराने पियक्कड़ों का लाभ होगा। शराब पीने का अभ्यास भी इससे छूट जायेगा। शराब की जगह दिन में २-३ बार पीना इसे आरम्भ करदो, तबियत शराब से स्वयं घृणा करने लगेगी। ४—मुंह में बार-बार पानी भरे तो भुनी सौंफ और छोटी इलायची चबानी चाहिये। ५—हुचकी और शिर दर्द हो तो बिदाल के डोंड़े के पानी से नस्य लेनी चाहिये। (बिदाल के ३-४ डोंडे पानी में भिगोदें. ४ घंटे बाद मल कर पानी छान लेना चाहिये। इस पानी की २ ३ बूंदें नाक में टप- काने से छींकें आकर बलगम तथा अन्य दोष निकल पड़ेंगे, यह नस्य सप्ताह में एक बार ही लेनी चाहिये) ६—मल अवरुद्ध होने पर सोते समय ३-४ दिन तक गुड़ की शक्कर मिला हुआ दूध पीना चाहिये। ७—मन सदैव प्रसन्न रखना चाहिये। ८—सदैव स्वच्छ रहो, पौष्टिक भोजन करो। ९—यथासम्भव अपने को लोगों में घिरा रहने दो, जो तुम्हारे शुभचिंतक हों। १०—अपनी विजय पर गर्व करो। ध्यान रखिये कि समस्त उपद्रव व इच्छायें दस दिन तक ही रहेंगी। ११ वें दिन तबि- यत हल्की और खुश होगी। एक पाप का बोझ हटता सा प्रतीत होगा।

तम्बाकू पीने का समय भी कितना व्यर्थ जाता है, यह भी सोचिये, २ घंटे नित्य इसमें खर्च हों, ६० दिन १ वर्ष में खर्च हुए। मिस्टर मिक्स समस्त दुनियाँ का हिसाब लगा कर बतलाते हैं, कि प्रति वर्ष करीब एक अरब रुपयों का तम्बाकू सेवन किया जाता है। वैज्ञानिक आधार पर यह बात मानी गई है कि पीने और खाने दोनों क्रियाओं से प्यास लगती है। मुँह और गला खुश्क हो जाता है। पानी पीने से भी प्यास कम नहीं होती, डाक्टर हम्प्रे ने कहा था कि यह न तो पोषक तत्व है, न पाचक हैं, न मानसिक और न शारीरिक शक्ति को बढ़ाने वाला है। यह तो हमारा प्रबल शत्रु है, जो नसों को काट डालता है, पेट को नष्ट करता है, प्यास को बढ़ाता है, जिस भूमि में तम्बाकू की खेती होती है, वह शक्तिहीन हो जाती है, जो व्यक्ति सिगरेट पीता है, वह ६० फीट तक तम्बाकू की गन्ध फैलाता है। (जीवन सखा)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तान्त्रिक का व्यर्थ प्रयास

(श्री मंगलचंद भंडारी)

किसी घने जंगल में एक बड़ा भारी तान्त्रिक चिरकाल से महा काल की साधना कर रहा था। उसने बहुत-सी अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त करली थीं और पूर्ण सिद्ध बनने के लिए घोर तप में प्रवृत्त था।

एक दिन वह अपनी गुफा में पड़ा हुआ सुस्ता रहा था, वह वहाँ पड़ी हुई चीजों से मनोरंजन करने लगा। इतने में एक चूहा उधर से फुदकता हुआ आ निकला। तान्त्रिक को उसके मनोभाव जानने में क्षण भर की भी देर न लगी, वह बिल्ली से डर कर यहाँ भाग आया था और कहीं छिपने की बात सोच रहा था। योगीराज की मौज आई कि लाओ इस बेचारे का डर दूर कर दें, उन्होंने एक फूँक मारी, तो चूहा अपना शरीर बदल कर बिल्ली बन गया। अब तो म्याऊँ म्याऊँ करता वहीं रहने लगा।

बहुत दिन के बाद तान्त्रिक को एक बार फिर फुरसत मिली। वह यों ही बैठा हुआ था कि देखा—बिल्ली थर-थर काँप रही है। बेचारी को कुत्तों ने घर दबाया था। तान्त्रिक से न रहा गया, उसने चुटकी बजा कर बिल्ली को कुत्ता कर दिया, ताकि फिर डरने का अवसर न आवे। कुत्ता कुछ देर तक दुम हिलाता हुआ कृतज्ञता प्रकट करता रहा।

लेकिन फिर भी उसे चैन नहीं था। गुफा से बाहर निकलता कि जंगली चीते उसका पीछा करते। डर के मारे वह फिर गुफा का कोना कुरेदने लगा। तान्त्रिक कुछ झुँझलाया तो सही, पर एक अवसर और दिया, पीठ पर हाथ फेर कर उसे चीता बना दिया और कह दिया—'जा अब निधड़क घूम फिर।'

लेकिन डर भी बड़ी बेढब चीज़ है। उसके लिए आसमान से विपत्ति आ खड़ी होती है। बहेलियों का झुण्ड चीते पकड़ने के लिये उस जङ्गल में आ टपका। बेचारे चीते का कलेजा धक्-धक् करने लगा। पिछली टाँगों में मुँह छिपाकर उसी गुफा के एक कोने में जान बचाने के लिए वह पड़ रहा, डर तो उसका पीछा छोड़ता ही न था।

इस बार तान्त्रिक तप पर से अँगड़ाई लेता हुआ उठा, तो उसका पैर चीते की दुम पर पड़ा। उसने चौंक कर देखा कि क्या है—"अहा, यह तो चीतेराम बैठे हुए हैं, महाशय जी को डर से छुटकारा नहीं, मन का भय इनके लिए साक्षात् भय बुला लाता है।" तान्त्रिक ने खोपड़ी खुजाई, तो उसमें से एक विचार टपक पड़ा—"जिसका हृदय जैसा है, वह वैसी ही परिस्थितियों में रहेगा। दूसरों के कन्धों पर खड़ा होकर कोई बड़ा हो भी जाय, तो इससे कुछ लाभ न होगा। अपने आप उपार्जित की हुई शक्ति ही वास्तविक और स्थायी शक्ति है। केवल दूसरों की सहायता से किसी का भला नहीं हो सकता।"

योगी ने कमण्डल उठाया और एक चुल्लू जल उस चीते के ऊपर फेंक दिया। वह चूहा बन कर बिल की तलाश में फिर फुदकने लगा। तान्त्रिक जमुहाई लेता हुआ, इधर-उधर टहल रहा था और इस बात का अनुभव कर रहा था कि उन्नति का एक ही मार्ग हो सकता है 'अपने पैरों पर आप खड़े होना।"

प्रत्येक से प्यार करो, थोड़े में सन्तोष रखो, और किसी को दुःख मत दो।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आध्यात्मिक साधना से क्या लाभ ?

प्रश्न उपस्थित होता है कि आध्यात्मिक साधनाओं के अभ्यासों में हम क्यों प्रवृत्त हों ? उन से हमारा क्या प्रयोजन ? हमें क्या लाभ मिलेगा ? यह प्रश्न यथार्थ में महत्व पूर्ण हैं। आइये आज इन पर विचार करें।

जिस प्रकार शारीरिक बल का संपादन करने से शारीरिक स्वास्थ्य उपलब्ध होता है और इसके आधार पर दैनिक जीवन के अन्यान्य कार्य पूरे होते हैं, उसी प्रकार मानसिक बल को उपार्जन करके हम चित्त की स्थिरता और शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। निश्चय ही मानसिक सन्तुलन ठीक रखने पर लौकिक और पारलौकिक सफलताऐं मिल सकती हैं।

मनुष्य विज्ञान शक्ति का भण्डार है। उस में प्राण तत्व इतनी प्रचुर मात्रा में भरा हुआ है कि उसके आधार पर असम्भव और आश्चर्यजनक कार्यों को पूरा किया जा सकता है। किन्तु हम उसका ठीक प्रकार उपयोग करना नहीं जानते यदि उसका समुचित रीति से उपयोग करना जान लिया जाय तो जीवन की दिशा दूसरी हो सकती है। मानवीय विज्ञान का समुचित उपयोग करना सीखना वैसा ही उपयोगी है जैसे घर के कीमती घोड़े पर चढ़ना जानना, या बैंक मे जमा हुए रुपये को निकालने की जानकारी रखना। वे मनुष्य बड़े अभागे हैं जिनके पास बहुमूल्य घोड़ा है पर उस पर चढ़ना नहीं जानते। अथवा जिनकी विपुल सम्पत्ति बैंक में जमा है किन्तु उसे निकालने की विधि नहीं जानते और पैसे पैसे को मुहताज फिरते हैं। आध्यात्मिक साधना का यह प्रथम फल बहुत ही महत्व पूर्ण है कि अपनी अपरिमेय शक्ति का समुचित उपयोग करना मालूम होजाय।

दुखों को दूर करने और सुख प्राप्त करने का हम सतत प्रयत्न करते हैं, सारा जीवन इन्हीं दोनोंकी उलट पुलट में व्यतीत हो जाता है, किन्तु मनोकामना पूरी नहीं होती। यदि कोई ऐसा उद्गम प्राप्त होजाय जहाँ से सुख और दुःख का उदय होता है और वहाँ अपनी इच्छानुसार चाहे जिसे ले लेने की सुविधा हो तो क्या इसे मामूली चीज समझना चाहिए ? विद्या, धन, स्वास्थ्य, स्त्री, सन्तान, प्राप्त करने पर भी जिस सुख को हम नहीं प्राप्त कर सकते उसकी सच्ची स्थिति प्राप्त का सच्चा मार्ग केवल आध्यात्मिक साधना द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

अपनी शक्ति को विकसित करना यह कितना महान् लाभ है। मानवीय अन्तस्तल में ऐसे ऐसे अस्त्र शस्त्र छिपे पड़े हैं जैसे भौतिक विज्ञान द्वारा अब तक न तो बन सके हैं और न भविष्य में बनने की सम्भावना है। यह हथियार, भ्रष्ट तान्त्रिक प्रयोक्ताओं की तरह मारण, मोहन, उच्चाटन के लिये ही नहीं वरन् बाल्मीक जैसे डाकुओं को ऋषि के रूप में परिणित करने की भी शक्ति रखते हैं। सुदामा और नरसी जैसे दरिद्रों के सामने क्षण भर में स्वर्ण सम्पदा के पर्वत खड़े कर सकते हैं,कोढ़ियों को स्वर्ण काय बना सकते हैं और डूबते दरिद्रों को पार कर सकते हैं। यह दिव्य शक्तियाँ भी आत्म साधना द्वारा ही सम्भव हैं।

यह बड़ी पेचीदगी है कि दूसरे क्या हैं ? वे किस प्रकार के विचार रखते हैं ? क्या चाहते हैं और कितनी योग्यता रखते है ? यदि इन सब बातों का ज्ञान हो जाय तो मनुष्य की बहुत सी कठिन समस्याऐं हल हो सकती है और वह ठीक व्यक्तियों से ठीक लाभ उठा सकता है। दूसरों के मनको पहिचानना, अन्यत्र होने वाली घटनाओं का जानना, भविष्य का पूर्वाभास प्राप्त करके सावधान रहना यह सभी बातें एक से एक उत्तम हैं और मानवीय अपूर्णता को दूर करती है।

हम स्वयं क्या हैं ? संसार क्या है ? कुछ और क के ज्ञान का तत्व क्या है ? इन का ठीक ज्ञान न होने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent

के कारण भव बाधाओं की कठिन पीड़ायें हम सहते हैं और चिरकाल तक नारकीय यंत्रणाओं में तड़पते रहते हैं। बंधन से मुक्त होकर सच्चिदानन्द स्वरूप को प्राप्त करना तभी संभव है जब हम ज्ञान दृष्टि से, दार्शनिक पद्धति से, ईश्वर, जीव, और प्रकृति का विवेचन कर सकें। रोग की ठीक रूप जाने बिना इलाज करना असंभव है। विश्व का तात्विक रूप जाने बिना भव से तरना नहीं हो सकता। और वह तत्व दर्शन आत्म साधन के ही परिणाम स्वरूप प्राप्त हो सकता है।

मिट्टी के खिलौनों से खेलने वाले, कुच काञ्चन में व्यस्त, बाल बुद्धि के अज्ञानी पुरुष, आध्यात्मिक साधनाओं का उपहास कर सकते हैं, अविश्वास कर सकते हैं, परन्तु विश्व की प्रचण्ड अनुभूतियों का तेज हमसे कहता है कि अज्ञानियो! आत्मा ही सत्य है। आध्यात्म विद्या ही सत्य है। प्राणियो! असत् की ओर नहीं सत् की ओर चलो।

आवश्यकताओं को कम करो

(ले०-श्री सेठ अगरचन्द नाहटा, सिलहट, आसाम)

अपने पूर्वजों के सुख शान्तिमय जीवन से जब हम अपने वर्तमान जीवन की तुलना करते हैं, तो हमारे जीवन में अधिक अशान्ति पाई जाती है। यही क्यों, आज भी ग्रामीण जीवन शहर निवासियों के जीवन की अपेक्षा अधिक सुखमय नजर आता है। इसके कारण पर विचार करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनकी आवश्यकताऐं कम हैं और हमारी आवश्यकताऐं इतनी अधिक बढ़ चुकी हैं, कि उनकी प्राप्ति करने में अविरत घुड़-दौड़ लगी रहती है। साधारणतया लोगों की यह धारणा होती है, कि शहर वाले नानाविधि वस्तुओं को उपभोग कर आनन्द उड़ाते हैं, ग्राम निवासियों को वे कहाँ से नसीब हों। पर जरा गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो यह धारणा ठीक प्रतीत नहीं होती। यह ठीक है कि शहर में अनेक प्रकार की खाने-पीने की चीजें मिलती हैं और ग्राम निवासी केवल दाल रोटी, छाछ, दलिया ही पा सकते हैं, फिर भी ग्राम निवासी अधिक स्वस्थ हैं और प्राप्त होने वाली थोड़ी वस्तुओं में ही संतुष्ट हैं, किन्तु शहर वाले अधिक प्रकार की खाद्य वस्तुऐं प्राप्त होने पर भी अन्य विविधि स्वादिष्ट वस्तुओं को खाने के लिये लालायित रहने के कारण अशान्त रहते हैं। इससे प्रतीत होता है कि यदि शांति पाने की इच्छा हो, तो आवश्यकताओं को कम करना चाहिये।

सुख और शांति तो सन्तोष में है, वस्तुओं के अधिकाधिक उपभोग में तो अधिक अशान्ति ही सम्भव है। मुझे बहुत बार विचार होता है, कि हमने अपनी आवश्यकताओं को बढ़ा कर ही अशान्ति मोल ली है। कलकत्ते में श्रमजीवियों को देखता हूं और सिलहट में अपने आश्रित मजदूरों पर दृष्टिपात करता हूँ, तो उनको दिन भर कठोर परिश्रम करके भी रात्रि को सुखनिद्रा में सोता हुआ पाता हूँ, वैसी निद्रा किसी लखपती को भी नहीं आती। मजदूर लोग संध्या होते ही खाने पीने से निपट कर गाना बजाना शुरू कर देते हैं और उसमें इतने मस्त हो जाते हैं, कि चिन्ता पास भी नहीं फटकती। किन्तु एक लखपती को रात के बारह बजे भी नींद नहीं आ रही है। एक के बाद दूसरी आवश्यकताओं की चिन्ता तैयार खड़ी है, उन चिन्ताओं का कोई वारापार नहीं। सब प्रकार की सुख सामिग्री उसके पास मौजूद है, फिर भी जरूरतों का अन्त नहीं, इसके विपरीत मजदूर गरीबी में भी प्रसन्न हैं और सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।

बड़े आदमी नित्य नये आविष्कार करके फूले नहीं समाते। जनता समझती है, कि यह जो नित्य नई सुविधाओं का आविष्कार हो रहा है, हमारे लिये आनन्दप्रद होगा। विलास की नवीन-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नवीन वस्तुऐं बड़ी आकर्षक प्रतीत होती हैं, किंतु परिणामतः वे उस तृष्णा को ही भड़काती हैं जो आकाश की तरह अनन्त हैं। मनुष्य उसके चक्कर में पड़ कर अपने अमूल्य जीवन को खो बैठता है, वह सुख चाहता है, पर दुख पल्ले पड़ता है। भारतीय ऋषियों ने सारे जीवन को तत्वचिन्तन में लगा कर इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था, कि—"जीवन को संयमित बनाओ, वासनाओं पर विजय प्राप्त करो, जो प्राप्त हो, उसी में संतोष करो, यही शांति का राज-मार्ग है।" किन्तु आज की सभ्यता उन सिद्धान्तों का उपहास करती है और आवश्यकताओं को बढ़ाने में लगी हुई है, फलस्वरूप चिन्ता और अशांति के बादल चारों ओर छाये हुए दिखाई पड़ रहे हैं।

मोटे तौर से यह बात कठिन प्रतीत होती है, कि जिनकी आवश्यकताऐं बढ़ी हुई हैं, वे उन्हें क्यों कर घटा सकेंगे। बढ़े हुए खर्चे को कम करना बड़ा दुस्तर कार्य मालूम होता है, पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है। जब आप दृढ़निश्चय के साथ आवश्यकताओं की कमी करने में जुट जावेंगे, तो आपको अनुभव होगा कि हमने अनेक अनावश्यक वस्तुओं को व्यर्थ ही आवश्यक समझ रखा था। हमारा गुजारा तो थोड़ी सी वस्तुओं से ही आनन्दपूर्वक हो सकता है। जीवन यापन करने और महान् उद्देश्य की प्राप्ति करने के लिये बहुत सा जंजाल जमा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनुभव बताता है कि सुख संग्रह करने में नहीं, अपरिग्रह में है।

जहाँ तक हो सके कमसे कम वस्तुओं द्वारा जीवन यापन करने का प्रयत्न करिये। ध्यान रखिये जितना ही आप अधिक जमा करेंगे, उतने ही अधिक गहरे दलदल में फसेंगे। आवश्यकता के बढ़ाने में अशान्ति का और संयमित जीवन में शांति का तत्व छिपा हुआ है।

निराशा के बाद आशा

(ले०-पं० प्रेमनारायण शर्मा गिरदावर कानूनगो, अम्वाह)

स्काटलैंड के राजा ब्रूस को अपने शत्रुओं से छः बार हारना पड़ा। उसने हर बार प्रयत्न किये, किन्तु असफलता के सिवाय और कुछ हाथ न आया।

छै बार हार जाने के पश्चात् वह बहुत निराश हो गया था और खिन्न मन से अपने प्राण बचाने के लिये एक टूटे-फूटे स्थान में छिपा पड़ा था। नाना प्रकार के विचार उसके मस्तक में घूम रहे थे, सोचता था, शायद मेरे भाग्य में असफलता ही लिखी होगी।

इन्हीं विचारों में वह पड़ा हुआ था, कि ऊपर छत पर उसकी निगाह गई। देखा कि एक मकड़ी जाला तानने के लिये बार-बार प्रयत्न करती है, किन्तु बार-बार असफल होती है, उसका तार हर बार टूट जाता है। राजा बड़े मनोयोग के साथ उसकी ओर देख रहा था, छै बार वह मकड़ी असफल हुई, किन्तु सातवीं बार उसका मनोरथ पूरा हो गया उसने जाले को तान ही लिया।

ब्रूस के मन में एक नवीन स्फुरणा हुई, उसने कहा यदि सातवीं बार मकड़ी सफल हो सकती है, तो मैं भी कृतकार्य हो सकता हूँ। अब की बार उसने दूने उत्साह के साथ सेना का संगठन किया और शत्रु पर चढ़ाई करदी। इस हमले में उसे सचमुच विजय प्राप्त हुई और अपना खोया हुआ राजसिंहासन प्राप्त कर लिया।

हममें से कितने ही ऐसे हैं जो एक दो बार की असफलता से ही निराश हो जाते हैं और प्रयत्न को छोड़ बैठते हैं। यह सफलता का मार्ग नहीं है। विजय की पुष्प माला उसके गले में पहनाई जाती है, जो अनेक बार निराशा के अवसर आने पर भी उन्हें कुचलता हुआ अपना ध्येय पथ पर बढ़ता ही चला जाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मजबूत रस्सी बांधो

(श्री. पी. जगन्नाथ नायडू, नागपुर)

एक किसान के खेत में एक गाय नित्य चर जाती थी। दुखी होकर किसान ने एक दिन उस गाय को पकड़ लिया और लेकर राज दरबार में पहुँचा। जब फरियादियों की पुकार हुई तो उस किसान ने अर्जी दी कि यह गाय नित्य मेरा खेत चर जाती है। हाकिम ने उस गाय को बँधवा लिया और उस गाय के मालिक को सिपाहियों द्वारा बुलवाया। जब वह आया तो हाकिम ने पूछा कि अपनी गाय को इस तरह चोरी करने के लिये क्यों छोड़ देते हो?

गाय के मालिक ने कहा—महाराज मेरा दोष नहीं है। यह गाय बहुत ही सीधी थी कभी किसी का खेत नहीं खाती थी पर मेरे पड़ौसी की गाय को चोरी की आदत है, उसी ने मेरी गाय को भी अपने जैसा बना लिया है। हाकिम ने पड़ौसी को भी बुलाया और पूछा कि तुमने ऐसी चोर गाय क्यों रखी है जो दूसरी गायों को भी चोर बनाती है? इस प्रश्न के उत्तर में उस पड़ौसी ने विनीत भाव से कहा—भगवन्, इसमें मेरा भी दोष नहीं है। पहले मेरी गाय बहुत ही सुशील थी पर जब से नया ग्वाला उसे चराने ले जाने लगा है तब से इसमें यह चोरी की लत पड़ी है। हाकिम ने हुक्म दिया कि अच्छा उस ग्वाले को पकड़ लाओ। ग्वाला आया उस से पूछा गया कि तूने किस तरह इस गाय को चोरी करना सिखाया? ग्वाले ने उत्तर दिया कि श्रीमान्! मेरी आधीनतामें चरने वाले सब पशु कुछ दिन पूर्व तक बड़े ईमानदार थे, भूलकर भी किसी के खेत में मुंह न डालते थे पर जब से मोती धीवर की गाय मेरे झुण्ड में आई है तब से ही सब गायें बिगड़ी हैं, उसी के दुस्स्वभाव ने सारे झुण्ड को चोर बना दिया है।

हाकिम ने सोचा तब तो मोती धीवर का ही कसूर है। सिपाही आज्ञा पाते ही मोती को बांधकर कचहरी में ले आये। हाकिम ने भौंहे तिरछी करते हुए कहा—क्यों रे! तूने गाय को चोरी करना किस प्रकार सिखाया? मोती के पांव कांप रहे थे, उसने डरते-डरते कहा हुजूर! मैंने चोरी करना नहीं सिखाया। कुछ दिनों तक कमजोर रस्सी से इसे बांधता रहा उस रस्सी को यह झट तोड़ जाती थी और पास के खेतों में चर आती थी। उसी टूटी हुई कमजोर रस्सी को जोड़ जाड़ कर फिर इसे बांधता लेकिन दूसरे दिन यह फिर तोड़ जाती। कई दिन यह क्रम चलता रहा, बस, तभी से यह पक्की चोर बन गई है।

× × × ×

दोष मामूली सा था इसलिये सब को डाट फटकार कर और आगे से ऐसा न करने की चेतावनी देकर किसान, गाय का मालिक, पड़ौसी, ग्वाला और मोती को छोड़ दिया गया। पर हाकिम को स्वयं सन्तोष न हुआ उसने चोरी की जड़ जानने के लिये और सारे मामले पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के लिये बड़े-बड़े न्याय अधिकारियों की एक सभा बुलाई। सभा में बहुत समय तक तर्क वितर्क और विचार विनिमय की धूम रही पीछे यही तय किया गया कि-झुण्ड की सारी गायों को चोर बना देने का दोष कमजोर रस्सी बांधने पर है। यदि मोती मजबूत रस्सी से गाय को बांधता तो चोरी का इतना प्रचार होने के कारण राज्य में जो अशान्ति उत्पन्न हुई है वह न होती।

लोग अपने मनको कमजोर रस्सीसे बांधतेहैं वह उसे तुड़ाकरहरियालीचरने चल देताहै, कुछ दिनों में उसकी आदतमजबूत होजातीहै और पक्का चोर बनजाताहै। एक चोर अपनी बुरी बात और बहुतों को सिखाता है, इस प्रकार बुराई की बेल फैलती है और संसार में अशान्ति का साम्राज्य छा जाता है। दुनियां को दुखों से बचाने का उपाय यह है कि हम लोग उसे मनों को धर्म की मजबूत रस्सी से बांधें इधर उधर न भटकने दें।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent

असभ्य की सभ्यता

उस वन्य प्रदेश में जहाँ तहाँ झोपड़ियाँ बनाकर हबसी लोग रहते थे। क्योंकि आधुनिक सभ्यता में अल्प बुद्धि वाले, जीने योग्य नहीं समझे जाते। बढ़ी हुई बुद्धि वाले लोग उनका पाशविक शोषण करते हैं और उनके स्वार्थ में वे जरा भी बाधक हुए तो चींटी की तरह कुचल दिये जाते हैं। उन दिनों स्पेन के गोरे चमड़े वाले हबसियों के साथ बड़ी निर्दयता का बर्ताव करते थे। इसलिए बेचारे हबसी अपने कुटुम्ब सहित जन शून्य जङ्गलों में रह रहे थे लेकिन यहाँ भी उन्हें त्राण न था। शिकारी लोग इधर से निकलते। काला हिरन न मिलता तो उसकी झुँझलाहट काले हबसी पर निकालते। गोली ठण्डी करने के लिए कोई तो चाहिए ही।

ऐसी ही घटना उस दिन भी घटी। एक स्पेनिश शिकारी को जब उस जङ्गल में कोई पशु हाथ न लगा तो उधर से निकलते हुए एक दशवर्षीय हबसी बालक पर ही निशाना साधा। एक ही गोली में छोटा सा बालक भूमि पर लेट गया-जिस पार्श्व में गोली लगी थी उसमें से रक्त का एक फुहारा छूट निकला।

प्रतिशोध-मनुष्य का स्वभाव है। हबसियों को पता चला तो उन्होंने बदला लेने के लिये उस शिकारी का पीछा किया। जालिम, और कुछ नहीं एक प्रकार का कायर है। दूसरों को सताने में वह वीर बनता है, पर अपने ऊपर जब आती है तो दीनता की हद कर देता है। शिकारी ने देखा कि उसका पीछा बड़ी तीव्रता से किया जा रहा है और वह जङ्गल में से जीता न निकल सकेगा तो वह एक हबसी की झोंपड़ी की तरफ दौड़ा। उस खेत पर एक कृष्ण काय पुरुष खड़ा हुआ था। हत्यारा उसके पैरों पर लोटने लगा—"मुझे बचा लीजिये, मेरे प्राणों की कीजिये, आप न बचाओगे तो मेरी जान चली जायगी।" उस असभ्य व्यक्ति ने कारण जानने की कुछ आवश्यकता न समझी और झट से एक कोठरी में छिपा दिया।

कुछ देर बाद उसकी तलाश करते हुए अन्य हबसी उधर आये। साथ में बालक की लाश थी। कृष्ण काय असभ्य ने जाना कि मेरे घर में छिपा हुआ हत्यारा मेरे पुत्र का ही घातक है। इकलौते पुत्र का मृत शरीर पर पिता ने खून के आँसू टपका दिये। पर उसकी जबान बन्द थी। पूछने वालों ने उस हत्यारे के उधर आने के सम्बन्ध में पूछा तो उसने अनभिज्ञता सूचक सिर हिला दिया। पीछा करने वाले लाश को पिता की सुपुर्द करके आगे बढ़ गये।

भगवान भास्कर इस पापी दुनिया पर से अपनी सुनहरी किरणें हटा कर चल दिये थे, रात्रि ने अपनी चादर तानना आरम्भ कर दिया था। हबशी ने उस कोठरी में जाकर हत्यारे को निकाला और अपने घोड़े पर उसे बिठाते हुए कहा—"जा, बिधर्मी हत्यारे, मेरी आंखों के आगे से चला जा। इस लाश को देख, मेरे ही इकलौते पुत्र को तूने मारा है। तेरा पाप दण्ड देने योग्य है, पर मैं शरणागत की रक्षा करना ही कर्तव्य समझता हूँ। मेरे इस तेज घोड़े पर बैठ कर रातों रात यहाँ से चला जा। ऐसा न हो कि कोई, हबसी तुझे देखले और टुकड़े टुकड़े कर डाले। मैं बदला नहीं लेता और अपना इन्साफ परमात्मा पर छोड़ता हूं।"

घोड़े पर बैठ कर वह स्पेनिश चला गया और पुत्र की लाश को गोद में धरे हुए पिता आँसू बहाता रहा। रात के तारे टिमटिमाते हुए इधर उधर झाँक रहे थे मानों वे असभ्य की सभ्यता और सभ्य की असभ्यता पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हों।

मनुष्य और पशु, पक्षी में जो चित् स्वरूप आत्मा है। वही परमात्मा है। चींटी से लेकर ब्रह्म तक जितने प्राणी हैं उन सबकी सेवा करना ही परमात्मा की सेवा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शिवजी कहां से देते हैं

(ले०—मास्टर उमादत्त सारस्वत, कविरत्न विसवाँ) (सीतापुर)

एक थे ब्राह्मण–देवता। शिव के अनन्य-भक्त, साथ ही निर्धनता की साक्षात् मूर्ति। घर में भी सिवा उनकी स्त्री के और कोई नहीं था। जाड़ा, गर्मी वर्षा कुछ भी हो पण्डितजी प्रातःकाल चार बजे उठते, नित्य क्रिया से निवृत होकर स्वयं पुष्प चुन लाते और फिर शंकराराधना में निमग्न हो जाते। बेचारी स्त्री दूसरों का कूटना–पीसना करके किसी प्रकार से उदर–पोषण का प्रबन्ध कर पाती थी।

श्रावण का महीना। पण्डितजी एक सहस्र एक बेल पत्रों में राम–नाम लिख कर प्रतिदिन अत्यन्त भक्ति पूर्वक शिवजी पर चढ़ाते थे। शिव–संकीर्तन तथा नाना प्रकार से पूजा-पाठ करके तब कहीं सायं-काल में जाकर जल ग्रहण करते थे। इसी प्रकार से उन्तीस दिन व्यतीत हो गये।

× × × ×

संयोग वश ठीक तीसवें दिन प्रातःकाल शंकरजी तथा पार्वती जी उधर से निकलीं। पण्डित जी शिव पूजन में तल्लीन थे। पार्वती जी की दृष्टि उन पर पड़ी तो उन्होंने शंकर जी से कहा–" भगवन्! यह ब्राह्मण वर्षों से आप का भजन करता है, परन्तु निर्धन ही बना है। देखिये न, श्रावण भर इसने कैसी श्रद्धा एवं भक्ति से आप का पूजन किया है!"

"ठीक कहती हो, देवि! महीने भर इसने जो इस प्रकार मेरी सेवा की है, उसका पारिश्रमक इसे आज सायंकाल में दिया जायगा।"—इतना कह कर वे दोनों अन्तर्ध्यान हो गये।

संयोग तो देखिये, जिस समय भगवान् शंकर तथा पार्वती जी में यह वार्तालाप हो रहा था; ठीक उसी समय एक 'करोड़-पति' वैश्य लोभीमल उधर से कहीं जा रहा था। उसने शंकर जी का अन्तिम वाक्य सुना तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ (मन ही मन सोचने लगा कि 'अरे यह तो बड़ा अच्छा सौदा हाथ लगा। शंकर जी उस ब्राह्मण को क्या कोई साधारण वस्तु थोड़े ही देंगे, सहस्रों-लाखों का धन उसके हाथ लगेगा। क्यों, इस अवसर से लाभ उठाया जाय तथा यह धन किसी प्रकार से स्वयं ही क्यों न हजम किया जाय!'

× × × ×

यह सोच कर वह उस ब्राह्मण से उसी दिन जाकर मिला। बोला—" महाराज! आप अत्यन्त निर्धन हैं। अतः आपने श्रावण भर जो बेल-पत्र शंकर जी पर चढ़ाये हैं। उसके बदले में आप मुझ से सौ रुपये लेलें उसका जो फल मिलेगा, वह मेरा रहा।"

ब्राह्मण ने स्त्री से यह समाचार कहा तो वह बोली "प्राणनाथ! आप देखते ही हैं कि कैसा कठिनता से हम लोगों के दिन व्यतीत होते हैं। यद्यपि 'पुण्य' बेचना अनुचित है, फिर भी विवशता सब कुछ करा लेती है। सौ रुपये मिल रहे हैं, यही सही। कुछ दिन तो आराम से कट ही जाँयगे।"

पण्डित जी राजी हो गये। उन्होंने सौ रुपये वैश्य से ले लिये और वैश्य खुश-खुश अपने घर चला गया।

× × × ×

श्रावण की पूर्णिमा। सन्ध्या का समय। लोभी-मल शिवालय में विराजमान हैं। मारे प्रसन्नता के फूले नहीं समा रहे हैं शंकर जी से असंख्य धन उन्हें जो मिलने वाला था!!! बैठे–बैठे रात्रि के दस बज गये। ग्यारह का समय भी व्यतीत हो गया। अब उन्हें कुछ कुछ सन्देह होने लगा।

"अरे क्या शंकर जी भी झूठ बोलते हैं।"

एक घण्टा और व्यतीत हुआ बारह बजे, फिर एक भी बजा, परन्तु वहीं कुछ भी नहीं। अन्त में क्रोध में आकर उसने दोनों हाथ शिव–मूर्ति पर पटक दिये। बोला—" अरे, तू भी अब झूठ बोलने लगा!!" दोनों हाथ उसी मूर्ति मे चिपक कर रह गये!! ज्यों–ज्यों छुड़ाता त्यों त्यों और भी मजबूती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से चिपकते जाते अन्त में बेचारा हार कर बैठ रहा। हाथ छुड़ाने में उसने बड़ा परिश्रम किया था, इससे उसे तत्काल ही निद्रा आ गई। स्वप्न में देखा कि वही शंकर जी त्रिशूल लिये हुए सामने खड़े हैं। वह भयभीत होकर उनके चरणों पर गिर पड़ा। कहने लगा '—महाराज! अब किसी प्रकार से मेरे हाथ इस में से छुड़वाइये।"

"काम तो तूने बड़ा बुरा किया है, परन्तु सवेरे यदि तू पचास हजार रुपया उस मेरे भक्त ब्राह्मण को दे दे, तो तू इस बन्धन से छूट सकता है, अन्यथा इसी प्रकार से तू कुत्ते की मौत मर जायगा।"

प्रातःकाल वही ब्राह्मण-देवता शंकर जी की पूजा के लिये वहाँ गये तो देखा कि बेचारे लोभी-मल बुरी तरह से मूर्ति से चिपके बैठे हैं। पूछा तो लोभी मल ने अपनी सारी कथा उनसे कह सुनाई। बोले—"कृपा करके आप मेरे पुत्र से कहलवा दीजिये कि वह फौरन पचास हजार रुपया लाकर मुझे दे जाय। वह रुपया शंकर जी ने आप को दिलवाया है।"

इस प्रकार से पचास हजार रुपया जब उस शंकर-भक्त को मिल गया तब उस वैश्य के हाथ छूटे। ब्राह्मण ने वह धन कंगालों तथा अपाहिजों में बाँट दिया। उस दिन से उसकी भक्ति शिव जी के प्रति और भी बढ़ गई।

× × × ×

"भगवन्! आपने अपने उस भक्त को कुछ दिया नहीं?' पार्वती जी ने एक दिन शंकर जी से पूछा।

"क्यों? दिये तो पचास हजार रुपये।"

"वह तो उस वैश्य ने दिये। आपने क्या दिया?"

"इसी प्रकार से तो मैं देता ही हूँ। अन्यथा मेरे पास सिवा भङ्ग, धतूरा तथा नान्दी बैल के और है ही क्या?

पार्वती जी मुस्कराईं और चुप हो गईं।

प्रेतात्माओं से साक्षात्कार

(ठा० रामकरण सिंह जी, जफरापुर)

दिन में शाम तक कोई भी समय निश्चित कर ठीक कर लो उसी समय बिस्तरे पर चित्त सो जाओ सारे शरीर को ढीला कर दो दोनों हाथ पेड़ू पर रक्खो, चित्त एकाग्र करने की कोई आवश्यकता नहीं है, लेटते समय यह समझो कि हमारे मृत इष्ट मित्र हमारे पास बैठे हैं, इस प्रकार शक्ति विकाश का प्रयत्न करने पर कभी २ बड़े २ गोल प्रकाश के धब्बे दिखाई देते हैं, कोई दृश्य भी दीखता है, अभ्यासी को पहले पहल नींद सी आने लगती है, कभी २ स्वर्गस्थ मित्र नींद लाते हैं, जिससे उन्हें अपना कार्य करने में आसानी होती है, ऐसी नींद में या ऐसी नींद से जागने के बाद यदि आप को कोई दृश्य दिखाई दे तो उसे स्वप्न न कहो या कोई विशेष दृश्य भी दीखे तो उसे भ्रम न कहो जो कुछ दीखे वह सब नोट करके रखते जाओ और अपने स्वर्गस्थ मित्र का उपकार मानते जाओ। यह अभ्यास का समय बिल्कुल फुर्सत का होना चाहिये जिससे अभ्यासी को अभ्यास करने में कोई बाधा नहीं आवे। सोने का यदि कोई अलग कमरा हो तो वह सबसे अच्छा होगा एक बार एक दुःखिनी माता अपनी बच्ची का संदेश पाने के लिये एक महापुरुष के पास गई तब उसे जो संदेश मिलना था वह तो मिला ही साथ ही साथ योगी ने उसे ऊपर लिखे प्रकार से अभ्यास करने को कहा वह स्त्री उक्त विधि से अभ्यास करने लगी दो तीन बार अभ्यास करने के बाद ही उस कमरे की दीवार पर कुछ आवाज आने लगी बाद में धुन्ध सा दीखने लगा चन्द हफ्तों के बाद उसको लड़की की तरह की आवाज "माँ" इस प्रकार पुकारती हुई सुनाई दी और मालूम हुआ कि किसी ने गले में हाथ डाला है। अब यह स्त्री अभ्यास से अपनी लड़की से वार्तालाप करने लगी है, किन्तु यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बुरे दिनों का आगमन

(ऋषि तिरुवल्लुवर)

उसके भाग्य में निस्संदेह दुःख बदा है,जो अपने मन को शुभ कार्यों में नहीं लगाना चाहता। कहते हैं कि होनी बड़ी प्रबल है, यदि ऐसा न होता तो यह जानते हुए भी कि बुरे कर्मों का बुरा फल होता है, लोग क्यों पाप कर्मों में प्रवृत्त होते ? जब किसी के बुरे दिन आते हैं, तो वह भलाई करना छोड़ देता और बुराई को समेटता फिरता है। यद्यपि उसने हजारों बार यह देखा और सुना होता है कि बुराई से बढ़ कर और कोई विपत्ति नहीं है, तो भी वह उसे ही अपनाता है। भवतव्यता इसे ही तो कहते हैं।

जिसके बुरे दिन आते हैं ,जिस पर दुर्भाग्य का प्रकोप होता है, वह आलसी बनता है और अप्रसन्न एवं उदास रहने लगता है। बुद्धि का श्रेष्ठ मार्ग से हटा कर प्रमाद की ओर झुकाता है। ऐसा करते-करते वह अपना सर्वस्व खोकर दुःखों की कीचड़ में फँस जाता है। जिस पर भाग्य लक्ष्मी प्रसन्न होती है, उसे उत्साह प्रदान करती है, वह अपने कार्य में तन्मयता के साथ जुटने लगता है। उसकी बुद्धि कुमार्ग को छोड़ कर सुमार्ग को ग्रहण करती है।

इसे हम भाग्य, होना, भवतव्यता ही कहेंगे, जब कि इस बात को खूब अच्छी तरह जानते हुए भी कि बुरे कर्म का फल बुरा और अच्छे का अच्छा होता, नेकी के कार्यों को छोड़ कर बदी करना स्वीकार करते हैं।

लड़की प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देती, अदृश्य आवाज़ से बोलती है। उपर्युक्त क्रिया ज्यादा से ज्यादा हफ्ते में तीन बार और प्रतिवार एक घंटा भर करनी चाहिये। कभी २ आपके पार्थिव शरीर में से सूक्ष्म शरीर निकल कर बाहिर के दृश्यों को देखता है।

कर्तव्य कर्म

(श्री स्वामी विवेकानन्दजी महाराज)

केवल कर्तव्य समझ कर कर्म करने वाले बहुत थोड़े हैं। श्रेष्ठ पुरुष कीर्ति, धन अथवा अन्य कोई भी स्वार्थ मन में न रख कर सिर्फ इसी लिए कर्म करते हैं कि दूसरे का भला हो। किसी का भी भला उन्होंने देखा कि उन्हें आनन्द होता है। कीर्ति के हेतु से जो कर्म किया जाता है, उसका फल प्रायः देर में मिलता है। कई बार देखा जाता है कि लोग जब जन्म भर कीर्ति के लिए प्रयत्न करते हैं, तब अन्त काल में कहीं जाकर यश मिलता है। यदि मनुष्य कोई भी उद्देश्य मन में न रख कर कर्म करेगा, तो क्या उसे उसके कर्मों का कोई भी फल न मिले ? मिलेगा अवश्य मिलेगा। सब से उच्च श्रेणी का फल उसे मिलेगा। परन्तु साधारण मनुष्यों में इतना धैर्य नहीं होता कि वे उसके फल-फूल होने तक रास्ता देखते रहें। शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ऐसे कर्मों का बहुत उत्तम प्रभाव होता है।

प्रेम सत्य और निस्वार्थ बुद्धि इन तीनों गुणों में हमारी चैतन्यता को पूर्णतया जागृत करने की सामर्थ्य है। स्वार्थ बुद्धि से प्रेरित होकर कर्म करने में हमारी जो सामर्थ्य खर्च होती है, वह किसी उपाय से फिर हमें लौट कर नहीं मिलती, किन्तु स्वार्थ बुद्धि छोड़ देने पर-मन पर अधिकार रखने में जो शक्ति खर्च होती है, वह कई गुनी अधिक होकर हमारे पास लौट आती है। इस प्रकार जिसका मन वश में हो जाता है, उसकी इच्छा शक्ति अत्यन्त दृढ़ हो जाती है और वही आगे चल कर और ईसा मसीह, मुहम्मद और बुद्ध की पदवी तक पहुँच जाती है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मृत्यु के बाद जीवन

कुछ समय पूर्व आस्ट्रेलिया के पोर्ट जैकसन नगर में केन्द्रीय जेलखाना था। उसी कारागार में देश के अधिकांश कैदी बंद रखे जाते थे। उन दिनों एक ऐसा कानून था कि जो कैदी जेल में सच्चरित्रता पूर्वक जीवन यापन करें उन्हें जेल से बाहर स्वतंत्र नौकरी करने की सुविधा रहेगी। बहुत से कैदी जिन्होंने जेल अधिकारियों को अपने व्यवहार से संतुष्ट कर लिया था, जेल से बाहर नौकरी करके अपनी जीवन सुविधा पूर्वक व्यतीत करते थे।

जेन्स नामक एक कैदी को भी यह सुविधा मिली थी। उसने उसी नगर के निवासी फिशर नामक जमीदार के यहाँ नौकरी करली। कैदी बोल चाल और व्यवहार में ऐसा निपुण था कि वह बहुत जल्द अपने मालिक का विश्वास भाजन और प्रिय बन गया। फिशर उसी से अपना सारा कारोबार कराते, यहाँ तक कि रुपये का लेन देन भी उसी के हाथों होता।

कुछ दिन बाद फिशर का बाहर आना जाना बिलकुल बन्द होगया। जेम्स ही सारा कारोबार करता। कोई उससे पूछता कि फिशर कहाँ है तो वह कह देता कि-परदेश जाने की तैयारी कर रहे हैं। थोड़े दिनों बाद उसने यह घोषित कर दिया कि फिशर जहाज द्वारा इङ्गलेण्ड चले गये। फिशर के एक घनिष्ट मित्र जान्सन ने जब यह समाचार सुना तो उसे बड़ा दुख हुआ। जान्सन पास के गाँव में ही रहता था और फिशर का इतना घनिष्ट था कि वे उससे बिना पू साधारण से काम को भी न करते थे। फिर वे एक सूचना तक दिये बिना इङ्गलेण्ड चले गये यह बात जान्सन के कलेजे में काँटे की तरह चुभी। वह पहिले तो बहुत बड़ बड़ाता रहा, पर आखिर उसने सोचा कि-ऐसा हो नहीं सकता। फिशर मुझ से सलाह लिये बिना विदेश नहीं जा सकते। वे किसी कारण कहीं छिप कर कुछ काम कररहे होंगे। अवश्य ही वे आस्ट्रेलिया में मौजूद होंगे।

कई महीने बीत गये पर फिशर के बारे में कुछ समाचार विदित न हुआ। जान्सन, हाट के दिन उधर से ही आया जाया करते थे। एक दिन संध्या समय वे हाट से लौट रहे थे, अचानक उनने देखा कि फिशर अपने घर के पास तालाब के किनारे खड़े हुए हैं। उनका मुख मलीन हो रहा है और किसी गंभीर व्यथा के साथ तालाब की ओर उंगली का इशारा कर रहे हैं।

जान्सन को इससे कुछ भी अचम्भा नहीं हुआ क्योंकि वह जानताथा कि फिशर कहीं बाहर हरगिज नहीं गये हैं। वह जल्दी-जल्दी मित्र के पास पहुँचने के लिये कदम बढ़ाने लगा ताकि उनके अज्ञातवास का सविस्तार कारण पूछे। लेकिन जैसे ही जान्सन वहाँ पहुँचा वह मूर्ति अदृश्य होगई। कई बार आँख मलीं, इधर उधर ढूंढा, जेम्स के पास जाकर पूछ ताछ की पर फिशर के संबंध मे कुछ भी पता न चला। जान्सन बड़े असमंजस के साथ घर लौटा और अपनी पत्नी से सारा हाल कह दिया। वह समझता था कि मैंने प्रेतात्मा देखी है और शायद फिशर मर चुका है पर उसकी पत्नी ने उसे झिड़क दिया और कहा अँधेरे में कुछ भ्रम हुआ होगा। व्यर्थ के संदेह को मन में से दूर करो और चुप चाप चारपाई पर सो जाओ।

दूसरे हफ्ते हाट का दिन फिर आया। जान्सन फिर गया और उस दिन वह दिन छिपे से कुछ पूर्व ही लौट पड़ा। आज भी उसने देखा कि बिलकुल पहले दिन की भाँति फिशर उसी मुद्रा में खड़े हुए हैं। दो तीन बार उसने आँखें मल मलकर अपना भ्रम निवारणकरना चाहापर यह तो उसके चिर सखा फिशर ही खड़े थे। वेदना पूर्ण विषाद के साथ तालाब की ओर उनकी उङ्गली इशारा कर रही थी। जान्सन भय और आशङ्का से काँप उठा, उसका

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कलेजा धक-धक करने लगा। इतने में ही वह मूर्ति फिर अदृश्य होगई।

घर पहुंच कर वह तमाम रात इसी घटना के सम्बन्ध में सोचता रहा। अब उसका विश्वास दृढ़ होगया था कि फिशर का मृत शरीर इसी तालाब में गढ़ा होगा। प्रातःकाल होते ही जान्सन पुलिस के दफ्तर में पहुंचा और उसने सारी घटना कह सुनाई। पहले तो सब लोग उसकी बात को भ्रम समझ कर हँसी में टालने लगे, पर जब उसने बहुत आग्रह किया, तो पुलिस साथ चलने को तैयार हो गई। ढूंढ़-खोज की गई, तो कीचड़ में गढ़ी हुई फिशर की सड़ी गली लाश मिल गई। सन्देह में जेम्स गिरफ्तार कर लिया गया।

इस महत्वपूर्ण मुकद्दमे का जजों को फैसला करना था। जेम्स अपने को निर्दोष कहता था और उसके विरुद्ध कोई प्रामाणिक गवाही ऐसी न थी, जिससे उसे अपराधी सिद्ध किया जा सके। निदान जूरी ने एक युक्ति सोची, उनने झूठ मूंठ यह फैसला सुना दिया कि जेम्स अपराधी है, उसे फाँसी दी जायगी। सजा सुनने के बाद जेम्स ने एक लम्बी साँस ली और कहा— "अब छिपाने से क्या लाभ। हाँ, मैंने ही धन के लोभ से अपने स्वामी की हत्या करके लाश को तालाब में गाढ़ दिया था।" इस स्वीकारोक्ति के आधार पर अदालत को उसके दोषी होने का विश्वास हो गया और उसे प्राणदण्ड का सच्चा हुक्म सुनाया गया।

उपरोक्त घटना माननीय जजों ने मुकद्दमे के फैसले में लिखी है और उसे भ्रम नहीं, वरन् यथार्थता के रूप में स्वीकार किया है। मानचेस्टर में 'टू वर्ल्डस' नामक पत्र में योगिनी एमा हार्डिंग ने इस विवरण को प्रकाशित कराया था। वह घटना बताती है कि मरने के बाद भी मनुष्य जीवित रहता है और अपने भूतपूर्व जीवन के बहुत प्रसंगों के साथ घना सम्बन्ध रखता है।

दूसरों की नाराज़गी

(पी० जगन्नाथराव नायडू नागपुर)

यदि हम से कोई नाराज़ होता है, तो उसका उत्तर वैसी ही नाराज़गी में न देना चाहिए, वरन् गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि, इसका वास्तविक कारण क्या है। बहुत करके हमें अपने दोष दिखाई नहीं पड़ते और दूसरों पर दोषारोपण आसानी से कर देते हैं। एकान्त में न्याय-बुद्धि से आत्म-चिन्तन करने पर यह मालूम हो सकता है कि इस नाराज़गी में हमारा कितना दोष है। अपनी त्रुटियों को सुधारना हर मनुष्य का धर्म है। हमारी भूल से यदि दूसरों को दुख पहुँचता हो, तो अपना सुधार करना चाहिए और नाराज़ होने वाले से निःसंकोच क्षमा माँग लेनी चाहिए।

किन्तु कई बार इसके विपरीत परिस्थितियाँ भी सामने आती हैं। दूसरे लोग अपनी भूलों का दण्ड हमें देना चाहते हैं। अपनी अनुचित इच्छाओं की पूर्ति के लिए हमारी आत्मा का हनन कराना चाहते हैं। ऐसे अवसरों पर गिड़गिड़ाने या परास्त हो जाने से काम न चलेगा। सत्-मार्ग पर पर्वत की तरह दृढ़ता के साथ खड़े होकर अपने कर्तव्य का पालन करना ही योग्य है। बालकों की इच्छानुसार अध्यापक नहीं चलता और न अपराधियों की इच्छानुकूल शासक अपना धर्म छोड़ देता है। कर्तव्य निष्ठ मनुष्य भूले भटके और भ्रमवश दोषारोपण करने वालों का रत्ती भर भी परवाह नहीं करता, वरन् उन्हें सुधारने के लिए कडुवे कार्यों को भी करता है, फिर भले ही उसे इसके लिए विरोध, उपहास या कष्टों का सामना करना पड़े।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लुंग-गोम-पा, सिद्धयोगी

प्रसिद्ध फ्रेंच परिव्राजक देवी श्रीमती अलेक्जेण्ड्रा डेविड नील ने सिद्ध योगियों की बहुत खोज की है। वे ब्रसेल्स विश्व विद्यालय की प्रोफेसरी छोड़कर बौद्ध धर्म में दीक्षित हुईं और १२ वर्ष तक तिब्बत में रहकर लामा योगियों के साथ रहकर आध्यात्म विद्या का अभ्यास किया। उन्होंने अपनी पुस्तक में लामा योगियों की असाधारण सिद्धियों का वर्णन करते हुए एक घटना का इस प्रकार उल्लेख किया है—

"उत्तरी तिब्बत के छङ्ग थ पठार में मैं मेरी एक लुङ्ग-गोम-पा योगी से भेंट हुई। मैं अपने पुत्र और सेवकों के साथ उस पठार को पार कर रही थी। इतने में मुझे एक छोटी काली चीज़ बहुत दूर से अपनी ओर दौड़ती हुई दिखाई दी। दुर्बीन लगाकर देखा तो एक मनुष्य आकृति दिखाई दी। इस सघन बन में यात्री का दिखाई देना एक आश्चर्य की बात थी। सोचा, शायद कोई यात्री भटककर इधर आ निकला होगा, चलो इसे भी साथ ले चलें। शङ्का निवारण के लिये मैंने अपनी दुर्बीन सेवक को दी और ध्यान पूर्वक देखने का आदेश किया। वह बोला—'लामा लुङ्ग-गोम छीग पा", अर्थात् यह तो लामा सिद्ध योगी के समान दिखाई देता है। मैंने ऐसे सिद्धों की करामातों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। किन्तु आंखों से देखने के थोड़े ही अवसर मिले थे। मैं द्रुतवेग से अपनी ओर आते हुए उस योगी को ध्यान पूर्वक देखने लगी और सोचने लगी कि जब वह पास आवेंगे तो उन से कुछ बातें करूंगी और फोटो खींचूंगी।

सेवक ने मेरी उत्सुकता को पहचान लिया और कहा—'देवीजी, आप इस योगी को भूलकर भी न छेड़ना, ऐसा करने से प्राणों पर सङ्कट आ सकता है।" मैंने उसकी बात मान ली और जरा हटकर खड़ी हो गई। जब वह हमारे पास से गुजरा तो मैंने देखा कि उस सिद्ध योगी की आँखें अधखुली थीं और आकाश में किसी ऊँचे पदार्थ को स्थिर दृष्टि से देखता था। वह रेलगाड़ी की तेजी से दौड़ रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो उसका शरीर एक गेंद है, जो बार-बार जमीन में लगती और जोर से उछलती हुई आगे चली जा रही है। वह धुनी हुई रुई की तरह हलका लगता था। बाँए हाथ में वस्त्र और दाहिने हाथ में 'फुर्वा' (अभिमंत्रित छुरी) लिए हुए था यह छुरी उसे छड़ी की तरह जमीन छूने पर सहारा देती जाती थी। कुछ ही क्षणों में वह इतनी दूर निकल गया कि फिर मैं उसे दुर्बीन की सहायता से भी न देख सकी।

आगे थेबगिपाई क्षेत्र पर जाकर अपने साथियों से मैंने उस दृश्य का वर्णन किया तो उन्होंने बताया कि 'लुङ्ग-गोम-पा' सिद्ध योगी रुई की तरह हलके बन जाने और हवा की तरह दौड़ने में पूर्ण दक्ष होते हैं। उन्हें और भी अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

दुष्ट मनुष्यों का मन ऐसे है जैसे कुत्ते की पूंछ-उसे बार-बार सीधा कीजिये, फिर भी टेढ़े होने की आदत न छूटेगी।

\+ + + +

पुल के नीचे एक ओर से पानी आता है और दूसरी ओर चला जाता है वह उसमें से एक चुल्लू भी अपने पास नहीं रखता। स्वार्थी पुरुष सदुपदेशों को इस कान से सुनते हैं और उस कान से निकाल देते हैं।

× × × ×

जब जोर की आंधी चलती हैं तो वायु के वेग से हिलते हुए पेड़ पहचाने नहीं जाते कि यह पीपल है या गूलर। जब मनुष्यके हृदयमें ज्ञान का तूफान होता है तो उसे प्राणिमात्र एकही जाति के दिखाई पड़तेहैं, ऊँचनीचकाभेद उसे दृष्टि-गोचर नहींहोता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रभु-प्रेम

(सन्त कवीर)

हिरदे भीतर लौ जले, धुवाँ प्रकट नहिं होय।
जाकी लागी सो लखे, कै जिहि लागी सोय ॥
मारया है ते मरि गया, बिन शिर थौथा भाल।
पड़ा पुकारै वृक्ष तर, आज मारै के काल ॥
नदियां जलि कोयला भई, समंदर लागी आग।
मछली रूखां चढ़ि गई, देखि कवीरा जाग ॥
पिंजर प्रेम प्रकासिया जागा जोग अनंत।
संसय छूटा सुख भया, मिला पियारा कंत ॥
पिंजर प्रेम प्रकासिया, अंतर भया उजास।
मुख कस्तूरी महँकसी, वाणी फूटी बास ॥
पानी ही ते हिमि भया, हिमि ह्वै गया बिलाय।
जो कुछ था सोई भया, अब कछु कहा न जाय ॥
अंक भरे भरि भेटिया, मन में नाहीं धीर।
कहै कवीर ते क्यूँ मिलै, जब लोग दोय शरीर ॥
जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अंधियारा मिट गया, जब दीपक देखा माँहि ॥
मान सरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुक्ताहल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं ॥
ममता मेरा क्या करे प्रेम उघाड़ी पौलि।
दरशन भया दयाल का सूलि भई सुख सौड़ ॥
नैनों अंतर आव तू पलक बन्द कर लेहुँ।
ना हौं देखों और को, ना तोहि देखन देहुँ ॥
मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सोंपते, क्या लागत है मोर ॥
कवीर सीप समुद्र की, रटे पियास-पियास।
समुद्रहि तिनका सम गिनै स्वांति बूँद की आस ॥
तो तो करै तो बाहुरों, दुर दुर करे तो जाऊँ।
ज्यों हरि राखें त्यों रहो, जो देवै सो खाऊँ ॥
उस समरथ का दास हों, कभी न होय अकाज।
पतिव्रता नंगी रहे, तो पति को हो लाज ॥

राम कृष्ण परमहंस के उपदेश

लुहार अपनी धोंकनी को निरंतर इसलिये धोंकता रहता है कि उसकी भट्टी की आग ठीक प्रकार जलती रहे। बुद्धिमान मनुष्य सत्पुरुषों के सत्संग इसलिए करता है कि उसका विवेक सदैव दीप्तमान रहे।

गिद्ध ऊँचे आकाश की स्वच्छ वायु में उड़ता है, परन्तु उसकी आँखें सड़े हुए मृत मांस को ढूँढ़ती रहती हैं। पाखंडी मनुष्य बातें तो आत्म ज्ञान की बहुत करते हैं, पर मन उनका स्वार्थ साधन में लगा रहता है।

तोता वैसे तो 'सीता राम-सीता राम' रटता रहता है पर जब बिल्ली उसे पकड़ लेती है, तो सीता राम भूल कर 'टें टें' करने लगता है। बकवादी मनुष्य रोज रोज बहुत ज्ञान-विज्ञान की बातें करते हैं, पर जब परीक्षा का समय आता है, तो अपनी बुरी आदतों को ही प्रकट करते हैं।

काजल की कोठरी में कितनी ही सावधानी के साथ रहिए, पर कहीं न कहीं दाग लग ही जायगा। इसी प्रकार दुष्ट स्वभाव के मनुष्यों के साथ रहने में मन में कुछ न कुछ दुर्भाव पैदा हो ही जाते हैं।

दर्पण के ऊपर मिट्टी चिपकी हो तो उसके ऊपर सूर्य की किरणें न चमकेंगी, जिसका हृदय कलुषित है, उसे ईश्वरीय सत्ता का आभास न मिलेगा।

लोहे की कील मिट्टी में तो आसानी से गढ़ जाती है, पर पत्थर में नहीं गढ़ती। सदुपदेश सज्जनों पर तो प्रभाव करते हैं, पर दुष्टों पर उनका असर नहीं होता।

लोहा जब तक गरम रहता है, तब तक लाल रहता है और जब ठंडा पड़ जाता है, तो उसका रंग काला हो जाता है। सत्पुरुषों के सत्संग से मनुष्य उज्ज्वल रहते हैं, परन्तु अकेले पड़ जाने पर मलीनता आ जाती है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खुद भी मदद कीजिए

अमेरिका में एक बार एक बड़ा युद्ध हो रहा था, सेना कहीं बाहर जा रही थी। रास्ते में एक बड़ा शहतीर इस प्रकार पड़ा हुआ मिला कि उससे निकलने में बड़ी रुकावट होती थी, इस लिये इस बात की जरूरत हुई कि इस शहतीर को रास्ते में से हटा कर एक तरफ डाल दिया जाय।

सेना के अधिनायक ने सिपाहियों को हुक्म दिया, कि इसे उठाओ और एक तरफ फेंक दो। सिपाही आज्ञा का पालन करने लगे, परन्तु शहतीर बहुत भारी था इसलिये वह उठ नहीं रहा था। अधिनायक दूर खड़ा खड़ा चिल्ला रहा था—नालायको, इसे उठाओ! हरामखोरी मत करो, मुर्दे की तरह हाथ मत चलाओ।

इस प्रकार के कटु शब्दों के प्रयोग से सिपाहियों में कोई नवीन उत्साह नहीं आ रहा था और शहतीर की समस्या हल नहीं हो रही थी। इतने में एक मामूली से आदमी ने अधिनायक के पास आकर विनम्र शब्दों में कहा—यदि आप स्वयं भी इन सिपाहियों के साथ जुट जावें तो यह काम आसानी से हो सकता है। अधिनायक ने झुंझला का कहा—'तू देखता नहीं, मैं कमाण्डर हूँ। मेरा काम हुक्म देना है, कुली का काम करना नहीं।' उस व्यक्ति ने अपनी गलती पर क्षमा मांगी और खुद सिपाहियों के साथ जुट गया और उन्हें उत्साह दिला कर तथा उठाने की युक्तियाँ काम में लाकर उस शहतीर को उठा कर अलग पटकवा दिया। जो कार्य बहुत समय से नहीं हो रहा था, वह जरा देर में होगया।

उस मामूली पोशाक वाले आदमी ने फिर जाकर अधिनायक के संमुख अभिवादन किया और कहा—यदि कभी फिर ऐसी कठिनाई आया करे तो आप मुझे बुला भेजा करें, मैं स्वयं मदद करके कठिन कामों को आसान कर दिया करूंगा। कमाण्डर ने उपेक्षा से भौंहें चढ़ाते हुए कहा—'तेरा क्या नाम है और कहाँ रहता है?' उस आदमी ने नम्रता से कहा—महोदय! मुझे जार्ज वाशिङ्गटन कहते हैं और इस देश के राष्ट्रपति के पते पर सूचना देने से वह मुझे मिल सकती है।

अमेरिका के प्रेसीडेण्ट जार्ज वाशिंगटन को अपने सामने खड़ा देख कर कमाण्डर के होश गुम हो गये, पैरों तले से जमीन खिसकने लगी। उसने गिड़गिड़ा कर अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी और भविष्य में खुद भी सिपाहियों के कामों में मदद देने की प्रतिज्ञा की।

हम अपने कामों को दूसरों पर टालते हैं और जब वे पूरा नहीं कर पाते तो झुंझलाते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि अपने साथियों के काम में थोड़ी सहायता की जाय और उन्हें सरलता का मार्ग बताया जाय। इस प्रकार कठिन कार्य आसानी से हल हो सकते हैं। ——

क्या आप अकेले हैं?

बहुत से मनुष्य ऐसी शिकायत करते सुने जाते हैं, हम अकेले हैं, हमसे कोई प्रेम नहीं करता, पैसा न होने की वजह से संसार में कोई हमारा नहीं है। उन्हें समझना चाहिये कि दूसरों के साथ अच्छे संबंध होने का कारण पैसा नहीं वरन निष्कपट प्रेम है। आप अपने को पवित्र बनाइये, दूसरों से निस्वार्थ प्रेम रखिए, उनकी भलाई में प्रवृत्त रहिए फिर देखिए, कि कितने साथी हो जाते हैं और वे आप पर प्राण तक देने को तैयार रहते हैं। उदासीन और शत्रुओं से वह घिरा रहेगा, जो स्वार्थी है। चूँकि स्वार्थ स्वयं मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, लालची आदमी का स्वार्थ विभिन्न रूप धारण करके उसके सामने नाचता रहता है पीला चश्मा पहनने वाले को जैसे सब चीजें पीली दीखती हैं, वैसे ही स्वार्थी मनुष्य को सब लोग शत्रु या उदासीन दीखते हैं। उदारता, सहानुभूति और निस्वार्थता ऐसे बढ़िया रक्षक हैं, जैसे जल में नाव। गहरे जल के ऊपर भी नाव में बैठ कर हम सुखपूर्वक सैर करते रह सकते हैं, फिर क्या निस्वार्थ हृदय होने पर दुर्जनों का भी प्रेम प्राप्त कर लेना सम्भव नहीं है?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

युग परिवर्तन का समय

(पं० श्याम बिहारी लाल जी रस्तोगी. बिहार शरीफ)

युग परिवर्तन के प्रश्न पर हरिवंश पुराण के भविष्य के अध्याय ४ में १२ से १६ तक के श्लोकों में कुछ प्रकाश डाला गया है। पाठकों के लाभार्थ उसका कुछ परिचय नीचे दिया जाता है—

मूर्खा स्वार्थपरालुब्धा क्षुद्राःक्षुद्र परिच्छदा।
व्यवहारोपकृत्तश्च्युता धर्मा शाश्वतात्।
हर्तारः पर रत्नानां पर दारा पहारकाः।
कामात्मानो दुरात्मानः सोपधाः प्रिय साहसाः।

लोग मूर्ख स्वार्थ परायण लोभी, तुच्छ नीच कामना वाले, दुर्व्यवहार करने वाले शाश्वत धर्म से पतित, पराये धन को चुराने वाले, पराई स्त्रियों में रत, कामी, दुरात्मा, ठग, भयंकर कर्म करने वाले हो जावेंगे।

विप्र रूपाणि रक्षांसि राजान् कर्ण भेदिनः।
पृथ्वीमुप भोक्ष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते॥
निःस्वाध्यायावब षट्कारा अनयाश्चभि मानिनः
विप्राः कुव्याद रूपेण सर्व भक्षा वृथा ब्रताः।

दुष्ट, राक्षस लोग ब्राह्मण रूप बनाकर फिरेंगे। राजा कानों पर विश्वास करने वाले होंगे. ब्राह्मण लोग स्वाध्याय और धर्म कर्मों को छोड़कर अनीति एवं अभिमान का आश्रय लेंगे। चील कौओं की तरह अभक्ष भोजन करेंगे और मिथ्या व्रत करेंगे। जब युग का अन्त होने को होगा तो ऐसी बातें होने लगेंगी।

महायुद्धं, महानादं, महावर्षं, महाभयम्।
भविष्यति युगे क्षीणे तत्कषायस्य लक्षणम्॥

महा युद्ध होंगे, तोप बम जैसे आग्नेय अस्त्रों की भयकर गड़गड़ाहट होगी, अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि होगी, साम्प्रदायिक दंगे, लूट मार, अग्निकाण्ड आदि के द्वारा बड़े भय उत्पन्न होंगे। इस प्रकार के दृश्य युगान्त के समय उपस्थित होंगे।

पतन का मार्ग

किसी ढालू पहाड़ के ऊपर से एक पत्थर को नीचे गिराइए। वह पहिले धीरे-धीरे लुढ़केगा और फिर आकर्षण शक्ति की तीव्रता के कारण हर क्षण दूने-चौगुने बेग से गिरने लगेगा। जैसे पहले सैकिंड में सोलह फीट गिरा था, दूसरे सैकिंड में अड़तालीस फीट. तीसरे में अस्सी फीट पाँचवें में १४४ और दसवें में यह बेग तीन सौ चार फीट प्रति सैकिंड के हिसाब से हो जायगा और आगे जितनी देर लगेगी, उतनी ही तेज़ी बढ़ती जायगी।

ठीक यही नियम हमारे स्वभाव पर लागू होता है। जब हम पतन के पथ पर कदम बढ़ाते हैं, तो पहले धीरे-धीरे खिसकते हैं, "थोड़ी बुराई कर लेने से कुछ हर्ज नहीं। इसे कोई न जान सकेगा और न हमारी कोई बड़ी हानि होगी।" किन्तु असल में ऐसा सोचना मूर्खता है। पतन के मार्ग में ऐसी आकर्षण शक्ति है कि वह वेग को दिन दूना, रात चौगुना करती जाती है। एक छोटा-सा कुविचार बढ़ते २ हमारे जीवन को पतन के गहरे गर्त में डाल सकता है।

इसलिए सावधान रहिए। पतन के पथ पर एक कदम भी आगे मत बढ़िये वरना पीछे सँभलना कठिन हो जायगा। तीर को छूटने से पहले ही रोक लीजिए, वरना पीछे पछताना ही हाथ लगेगा। यदि आज छोटा-सा कुविचार मन में उठे, तो उसे आज ही, इसी क्षण ही, कुचल दीजिए।

यह बातें आज प्रत्यक्ष दिखाई दे रही हैं, इस से प्रतीत होता है कि अब युग परिवर्तन का समय आ गया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सदाचार का सोपान

(श्री० गोपी किशनजी बियानी, अक्याव (ब्रह्मा)

सुवृत: शील सम्पन्न: प्रसन्नात्मात्मविद् बुध:।
प्राप्येह लोके सन्मानं सुगति प्रेत्य गच्छति ॥

व्यक्ति हो चाहे कुटुम्ब हो, समाज हो चाहे राष्ट्र हो इन सबका कल्याण और सुख प्राय: उनके सदाचार पर अवलम्बित रहता है। सदाचार ही कल्याण और सुखका घरहै। व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज अथवा राष्ट्र के सदाचार का जब ह्रास होने होने लगता है, तब उन से नाश का आरम्भ हो जाता है।

सदाचार के अमृत रूप वृक्ष का बीज बालपन में ही मनुष्य के हृदय में बोया जाता है और दुराचार के विष वृक्ष का बीज भी बालपन में ही बोया जाता है, इस लिये कुटुम्ब के प्रौढ मनुष्यों को अवश्य ही इस विषय में विशेष सावधानी चाहिए।

सांसारिक कर्तव्यों और व्यवहारों को सुचारु रूप से सम्पादित करने से मनुष्य का हार्दिक वृत्तियों का विकास होता जाता है।

निर्दोष और स्थिर अन्त:करण में सद्बुद्धि की उपज होती है, सद्बुद्धि से कर्तव्य निष्ठा बढ़ती जाती है। जब कर्तव्य निष्ठा बढ़ने लगती है तब मनुष्य के द्वारा सत् कार्य होने लगते हैं। सत् कार्यों से हृदय पर उत्तम संस्कार पड़ते हैं, जिनसे सदाचार की वृद्धि होती है, यदि आप सदाचार की उन्नति चाहते हो, तो सद्बुद्धि रूपी स्वच्छ और निर्मल गङ्गाजल का प्रवाह आप के हृदय में अवश्य सदैव बहते रहना चाहिए। हृदय खूब शुद्ध और पवित्र रहना चाहिए। हृदय में दोषों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेना अत्यन्त आवश्यक है और इस के लिये प्रत्येक मनुष्य को आत्म निरीक्षण करके अपने दोषों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेना सदाचार सोपान का महत्व पूर्ण अंश है।

सुखी दाम्पत्ति जीवन

वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने के लिए बौद्ध धर्म में पुरुषों और स्त्रियों के लिए ये पाँच २ नियम बताये गये हैं—

पुरुषों के लिए।

१—अपनी पत्नी का हृदय से सम्मान करो।

२—पत्नी के व्यक्तिगत मनो भावों के कारण क्रोधित मत हो।

३—अपनी पत्नी के सिवा किसी दूसरी स्त्री से प्रेम न करो।

४—पत्नी के भोजन वस्त्र की सदा फिक्र रखो।

५—पत्नी को समय २ पर उपहार लाकर दो।

स्त्रियों के लिये।

१—पति के घर में आने पर उठ कर उनका स्वागत करो।

२—इसी प्रकार उनके घर से बाहर जाने पर अभिनन्दन करो। पति के लौटने तक उनके लिये भोजन तैयार करके रखो तथा घर के दूसरे काम भी समाप्त करलो।

३—किसी अन्य पुरुष से प्रेम न करो। पति क्रोध में हो तो तुम शान्त हो जाओ।

४—पति की आज्ञाओं का पालन करो और घर की कोई बात उससे मत छिपाओ।

५—पति जब आराम करता हो तो बिना बुलाये उनके पास मत जाओ।

धर्म ईश्वर और सत्पुरुषों के विषय में पूज्य श्रद्धा उत्पन्न होने से हृदय की सद् वृत्तियाँ प्रबल होती हैं और मनुष्य के सदाचार की उन्नति होती है।

साराँश यह है कि शिक्षा आर्थिक दशा शासन पूर्वजों का तिरस्कार और सज्जनों का पुरस्कार इत्यादि सामाजिक निबन्धों का यदि उचित रूप से पालन किया जाय तो लोगों की सदाचार में अवश्य वृद्धि होती है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सतयुग अभी दूर है

(श्री. अग्रसोची)

मनुष्य जाति को भविष्य जानने की बड़ी उत्सुकता रहती है। हर कोई जानना चाहता है कि भविष्य में क्या होगा जड़ प्रकृति एक ही नियम पर निर्धारित है और वह अपने प्रेरक की इच्छानुसार घूमती रहती है। इसलिये ज्योतिष शास्त्र ग्रहण वर्षा नक्षत्रों का उदय अस्त होना भूकम्प अकाल आदि का तो निर्णय कर लेता है, परन्तु चैतन्य मनुष्यों के समाज के बारे में कोई निश्चित भविष्य वाणी करना असम्भव है। क्यों कि जीव चैतन्य और स्वतन्त्र है उसे अपना भविष्य बनाने की पूरी-पूरी आजादी प्राप्त है। लोग चाहें तो एक साल में सतयुग बुला सकते हैं और चाहें तो आये हुए सतयुग को शताब्दियों के लिये दूर हटा सकते हैं।

फिर भी हम भविष्य के बारे में सोचते हैं और उस कल्पना में अधिकांश बातें ठीक भी होती हैं। आज के विचार और कार्यों के आधार पर कल की बात बता देना कोई बहुत मुश्किल है। जो विद्यार्थी मन लगाकर पढ़ता है उसके लिये यह भविष्य वाणी कर देना कुछ कठिन नहीं है कि वह परीक्षा में पास होगा और होता भी यही है यदि कोई विशेष कठिनाई आकर उपस्थित न होजाय तो प्रायः वह पास ही होगा। भविष्य की कल्पना पर आज का काम करते हैं और आज के कामों से भविष्य का अन्दाज करते हैं। चाहे सौफीसदी यह अनुमान ठीक न बैठे तो भी धकांश में यह ठीक ही बैठता है। कल हम पर क्या बीतेगी, इसका अनुमान आज के कार्यों के आधार पर सभी विचारक और विद्वान् लगाते हैं। एक दार्शनिक का कथन है कि भविष्य के बारे में सोच विचार करते रहना मनुष्य जाति की अनिवार्य आवश्यकता है।

आइए, हम मनुष्य जाति का भविष्य जानने के लिए आज की स्थिति का सिंहावलोकन करें। क्यों कि वर्तमान के आधार पर ही भविष्य का निर्माण होता है। जन-समाज में यह एक धारणा फैली हुई है कि युद्ध के बाद शान्ति होती है। इसलिए यह समझ लिया जाता है कि लड़ाई के बाद लोग अपनी मूर्खता समझ जायँगे और शान्ति से रहने लगेंगे। परन्तु अनुभव से यह धारणा गलत साबित हुई है। सन् १४ से १८ तक महायुद्ध हुआ। उसके बाद यह समझा गया कि अब बहुत दिनों तक सुख शान्ति का राज्य रहेगा। किन्तु ऐसा हुआ नहीं। जनता की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वरन् स्वार्थ और शोषण का दौर पहिले से भी अधिक चलने लगा। दो दशाब्दियाँ ही बीतने पाई थीं कि, युद्ध पहले से भी अधिक प्रचण्ड रूप धारण करके प्रकट हो गया। हमारा अनुमान है कि ऐसी सैकड़ों लड़ाइयाँ भी मानव जाति का सुन्दर भविष्य निर्माण न कर सकेंगी। जर्मनी सोचता है कि मेरे साथ गत युद्ध में न्याय नहीं हुआ। उसका प्रतिशोध कुछ ही दिनों बाद फूट पड़ा। सत्ताधारियों ने संसार की अधिकांश निरीह जनता को पददलित शोषित और गुलाम बना लिया है। अरबों जिह्वाएें कुछ कहना चाहती हैं पर उनकी जबान पर ताला और सीने पर छुरा तना हुआ है। मानव की अन्तरात्मा को, उसकी प्रकृति दत्त स्वाधीनता को कुचलने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। क्या आप सोचते हैं कि अगणित हृदयों की मन मसोस की दबाई हुई आकांक्षाऐं योंही दबी रहेंगी? नहीं ऐसा न होगा शोषण से शान्ति का नहीं विद्रोह का सूत्र पात होगा और उस विद्रोह की लपलपाती हुई चामुण्डा अपनी रक्त पिपासा तृप्त करती रहेगी।

युद्ध से युद्ध का अन्त नहीं होगा हिंसा से शान्ति को आविर्भाव नहीं होगा। आज हम देखते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है कि संसार इस सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। वह अपनी महत्वाकांक्षाओं पर दूसरों के हितों को बलिदान करने पर तुला हुआ है। लोगों के हृदय में स्वार्थ की भट्टी धाँय धाँय करके जल रही है, क्या छोटा क्या बड़ा, क्या अमीर क्या गरीब अपने तुच्छ स्वार्थ से आगे की बात नहीं सोचता। दया धर्म, प्रेम और मानवता का दर्शन होना कठिन हो रहा है। जब तक इस दुर्बुद्धि में अन्तर न आवेगा तब तक सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित न होगा। आज मनुष्य जाति धर्म को छोड़ कर अधर्म की ओर अग्रसर हो रही है। इसके कड़ुए फल उसे भोगने ही पड़ेंगे। इस दृष्टिकोण से विचार करने पर यह भविष्य वाणी करना अनुचित न होगा कि—"सतयुग अभी दूर है।"

जिस तरह नदी के एक चुल्लू भर पानी में उसके सभी गुण होते हैं। उसी तरह पुरुष में भी प्रभु के सब गुण होते हैं।

× × ×

यदि तुमको आनन्द और शान्ति की आवश्यकता है, तो उसकी प्राप्ति का केवल यही रास्ता है—अपने को जीतो, अपनी समस्त अभिलाषाओं का अन्दर रहने वाली शक्ति को पहरेदार बना दो।

× × ×

यदि तुम को झूठ बोलने से, आत्मा को दुःख पहुंचाने से सम्पत्ति मिले, तो वह ठीक नहीं है। न्याय और परिश्रम का एक १ पैसा, अन्याय के १ रुपये के बराबर है।

असन्तों के स्वभाव

(तुलसी कृत रामायण से)

सुनहु असन्तन केर सुभाऊ।
भूलेहु सगत करिये न काऊ॥
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई।
जिमि कपिलहि घाले हरहाई॥
खलन हृदय अति ताप विशेखी।
जरहिं सदा पर-सम्पति देखी॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई।
हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई॥
काम क्रोध मद लोभ परायन।
निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥
बैर अकारण सब काहू सों।
जो कर हित अनहित ताहू सों॥
झूठै लेना झूठै देना।
झूठै भोजन झूठ चबेना॥
बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा।
खाँय महा अहि हृदय कठोरा॥

दोहा—पर-द्रोही पर-दाह रत, परधन पर अपवाद।
ते नर पामर पाप मय, देह धरे मनु जाद॥

लोभै ओढ़न लोभै आसन।
शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन॥
काहू की जो सुनहिं बड़ाई।
स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥
जब काहू के देखहिं विपती।
सुखी होहिं मानहु जग नृपती॥
स्वारथ रत परिवार विरोधी।
लंपट काम लोभ अति क्रोधी॥
मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं।
आपु गये अरु आनहि घालहिं॥
करहिं मोह वश द्रोह परावा।
सन्त संग हरि कथा न भावा॥
अवगुण सिन्धु मन्द मति कामी।
वेद विदूषक पर धन स्वामी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पाठकों का पृष्ठ

"धनवान बनने के गुप्त रहस्य" पुस्तक मिली। पुस्तक क्या है, निराश, बेकार और गरीब लोगों में प्राण भर देने वाली बिजली है। लोग धन प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु उन्हें उसके गुप्त रहस्यों का पता नहीं होता, इसलिए जन्म भर असफल रहते हैं। आपने इस पुस्तक में वे रहस्य खोल कर रख दिये हैं, जिनके बिना कोई धनवान नहीं बन सकता।

—प्रकाशनारायण सकसेना, रीवां।

मैं धनवान बनने के लिए बहुत दिनों से चिन्तित हूँ। इसके लिए सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी हैं, उनमें चूरन, चटनी, तेल, साबुन बनाने की विधियों के अलावा कुछ नहीं होता। हम देखते हैं कि इन चीजों को बनाने और बेचने वाले हर शहर में सैकड़ों हैं, पर एक भी धनवान दिखाई नहीं देता। आपकी पुस्तक अनूठी है, उसमें कुबेर की अन्तरात्मा बोलती हुई सुनाई पड़ती है। ऐसी ही पुस्तकें हम गरीबों का भला कर सकती हैं। 'धनवान बनने के गुप्त रहस्य' पुस्तक छापने के लिए आपको बधाई।

—विद्याप्रकाश जैसवाल, फरीदपुर।

आपने 'धनवान बनने के गुप्त रहस्य' पुस्तक लिख कर देश की बड़ी भारी सेवा की है। मैंने इसे दस बार पढ़ा है, पर तृप्ति नहीं होती। निस्संदेह धनवान बनने का केवल यही मार्ग हो सकता है, जिसका इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। भौतिक वाद और आध्यात्मवाद का यह अद्भुत संमिश्रण है।

—तिलकचंद लखनचंद राठी, जौनपुर।

'बुद्धि बढ़ाने के उपाय' मुझे बहुत पसन्द आई है। बहुत खोज के साथ लिखी गई है, हमारे स्कूल के विद्यार्थी इसमें वर्णित उपायों को काम में लारहे हैं।

—नन्दकिशोर द्विवेदी, जबलपुर।

समालोचना।

नाम महात्म्य—वृन्दाबन—(तीर्थाङ्क) संपादक पं० दानबिहारीलाल शर्मा, वार्षिक मूल्य १॥), इस अंक का १) वार्षिक ग्राहकों को विशेषांक मुफ्त में। भारतवर्ष के प्रायः सभी तीर्थों का परिचय इस अंक में है। अनेक चित्रों से सुसज्जित ३०० पृष्ठ के इस विशेषांक में तीर्थोंसम्बन्धी अलभ्य सामिग्री का समन्वय है। धार्मिक जनता के लिए एक बहुत ही आवश्यकीय विषय पर ऐसा सुन्दर विशेषांक निकलने के लिए सम्पादक महोदय बधाई के पात्र हैं। धार्मिक जनता को इसे अपनाना चाहिये।

संकीर्तन—मेरठ (श्री कृष्ण चरितांक) संपादक श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र' वार्षिक मूल्य २≡) इस अंक का २॥) भगवान कृष्ण की लीलाओं का सरस और सरल भाषा में वर्णन किया गया है। भावुक भक्तों के लिए कृष्णलीलामृत वैसे ही बड़ा मधुर है, इस अंक में बहुत ही योग्यतापूर्वक सुसज्जित करके उसे और भी हृदयग्राही बना दिया है। अपने ढंग का यह अनूठा विशेषांक है। पृष्ठ और चित्रों की दृष्टि से तो ऐसा विशेषांक निकालना बड़े साहस का काम है, पत्र सर्वथा संग्राह्य है।

सात्विक जीवन—=३ पुराना चीना बाजार कलकत्ता (नव-वर्षांक) संपादक श्री महेन्द्रनाथ वर्मा वार्षिक मूल्य ३) सात्विक जीवन गत वर्ष साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होता था, इस वर्ष से मासिक प्रकाशित हुआ करेगा। द्वितिय वर्ष का पहला अंक नव-वर्षांक के रूप में हमारे सामने है। पत्र के सभी लेख एक से एक बढ़ कर गंभीर, खोजपूर्ण और उपयोगी हैं। सात्विक जीवन का दृष्टिकोण जन्म से ही मानवी जीवन को उच्च बनाना रहा है। निस्संदेह यह पत्र एक महान् आवश्यकता की पूर्ति कर रहा है। इसे अपनाने की जनता से हमारी जोरदार प्रार्थना है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पराधीन भारत के उद्योग पतियों की विजय—यात्रा का इतिहास !

हिन्दी साहित्य जीवन में नई सृष्टि ! एक सर्वथा नया आयोजन !

लेखक द्वारा लिखी जाने वाली १०० जीवनियों में १५ का अद्वितीय बेजोड़ संग्रह भी छप गया। अवश्य खरीदिये।

'भारत की व्यवसायी विभूतियां'

प्रणेता—विद्याभूषण पं० मोहन शर्मा, विशारद पूर्व सम्पादक—"मोहिनी'

भूमिका लेखक—प्रोफेसर श्री ज्वालाप्रसादजी, सिंहल, एम० ए०, एल-एल० बी, एफ० आर० ई० एस०

इस अनुपम ग्रन्थ में देश के उन उद्योग संचालकों की जीवन झाँकियां बोलती हुई भाषा में अङ्कित की गई हैं, जो स्वावलम्बन, अध्यवसाय आदिश्रेष्ठ गुणों की सहायता से धन, जन, प्रतिष्ठा और सेवा बल में विश्व विख्यात हुए हैं। पुरुषार्थ और मनोबल के निरन्तर उपयोग द्वारा मनुष्य क्या से क्या बन सकता है। इसके जुदे २ चित्र इस एक ही ग्रन्थ में देखिये।

अपनी प्रति के लिये आज ही मांग भेजें। अन्यथा द्वितीय संस्करण तक ठहरना होगा। मूल्य सजिल्द का १॥) अजिल्द का १) रुपया।

विक्रेता—मोहिनी कार्यालय, इटारसी, (सी० पी०)

मथुरा से शीघ्र ही निकलने वाला धार्मिक एवं सदाचार विषयक सचित्र मासिक-पत्र

सम्पादक—
श्री० दानबिहारीलाल शर्मा
वृन्दाबन

"सत्संग"
—के—

संचालक—
बा० प्रभुदयाल मीतल,
मथुरा।

वार्षिक मूल्य १॥≡)—आज ही ग्राहक बनिये—एक प्रति का =)॥

यह पत्र बहुत शीघ्र बड़ी सज धज के साथ निकल रहा है। इसमें पूज्य महात्माओं के कल्याणकारी उपदेश, मानव जीवन को दैवी बनाने योग्य नैतिक एवं आध्यात्मिक लेख एवं सुरुचिपूर्ण उपदेशप्रद कवितायें तो प्रति मास रहेंगी ही, साथ ही स्वास्थ्य, सदाचार, तथा सन्मार्ग विषयक ऊँचे दर्जे के विचारों का भी नियमित प्रकाशन इसमें होगा। इस पत्र को देश के अनेक पूज्य महात्माओं, उच्च श्रेणी के प्रसिद्ध विद्वान् एवं नामी भावुक सुकवियों का पुनीत सहयोग प्राप्त होगया है। इसी से इसमें ठोस और बड़े काम की पाठ्य सामग्री रहेगी।

इस सूचना के पढ़ते ही शीघ्र ही कृपया १॥≡) रु० भेजकर ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखाइये। जो सज्जन इस पत्र के आठ ग्राहक बनाकर उनका मूल्य व पते हमें इकट्ठे भेजेंगे, उन्हें एक वर्ष तक यह बिना मूल्य ही मिलेगा। अतः ग्राहक बनने की शीघ्रता कीजिये।

पता—
मैनेजर— 'सत्संग"
सत्संग-भवन, मथुरा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.